



पुष्पांजली दुडे

नई सोच, नई पहल

ग्वालियर, बुधवार, 28 जुलाई, 2021



वन-टू-वन



जोरदार बारिश से हुई दिल्लीवालों की यूपी-बिहार में भी अलर्ट

देहरादून (ए.) देश के कई राज्यों में भारी बारिश का कहर जारी है तो वहीं कई राज्य उमस भरी गर्मी झेल रहे हैं। कई दिनों से गर्मी में जो रहे राजधानी के लोगों को मंगलवार सुबह कुछ राहत मिली। दिल्ली के कई इलाकों में मंगलवार को बारिश हुई। मौसम विभाग का अनुमान था कि दिल्ली समेत हरियाणा और राजस्थान के कुछ इलाकों में 27 जुलाई को बारिश होगी। यूपी-बिहार में भी मौसम करवट लेने वाला है। आईएमडी बिहार के लिए अलर्ट जारी किया है। बिहार में भारी बारिश के साथ वज्रपात होने की संभावना है। वहीं यूपी के कई जिलों में सावन के शुरू होते ही झमाझम बारिश देखने को मिल सकती है। इसके अलावा उत्तराखंड के कुछ जिलों के लिए मौसम विभाग ने रेड अलर्ट जारी किया है। यहां भारी से बहुत भारी बारिश देखने को मिल सकती है। मौसम विभाग ने कहा है कि यूपी के कुछ जिलों में दो दिनों तक भारी बारिश देखने को मिल सकती है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सहारनपुर, मुजफ्फरपुर, बिजनौर, अमरोहा, रामपुर, बरेली, में भारी बारिश होने की संभावना है। इसके अलावा मेरठ, बागपत, अलीगढ़, गाजियाबाद, एटा, कासगंज में भी 27 जुलाई और 28 जुलाई को भारी बारिश की चेतावनी जारी की है। आईएमडी ने रविवार को दिल्ली में सोमवार के लिए येलो अलर्ट जारी किया था और आसमान में आमतौर पर बादल छाए रहने और शाम में मध्यम स्तर की बारिश या गरज के साथ बौछारें पड़ने का अनुमान बताया था। विभाग ने मंगलवार के लिए अलर्ट जारी कर तेज हवाओं के साथ बारिश होने की संभावना जताई है। उत्तराखंड में अगले 6 दिनों तक बहुत भारी बारिश होने की संभावना है, जिससे देखते हुए मौसम विभाग ने रेड अलर्ट जारी कर दिया है। राज्य के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सभी जिलाधिकारियों को अलर्ट रहने के निर्देश दिए हैं। मौसम विभाग के मुताबिक 27 जुलाई को पिथौरागढ़, नैनीताल, पौड़ी और देहरादून के लिए रेड अलर्ट जारी किया है। हिमाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल, सिक्किम, कोकण और गोवा, तटीय कर्नाटक, केरल और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में एक या दो स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश के साथ एक दो स्थानों पर तेज बारिश हो सकती है। इसके अलावा छत्तीसगढ़, पूर्वी मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में हल्की बारिश हो सकती है।

भाजपा से लड़ने के लिए ममता और माकपा मिलाएगी हाथ

कोलकाता (ए.) पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में भाजपा को पटखनी देने के बाद तुणमूल मुखिया ममता बनर्जी के हैसिले बुलंद हैं। वहीं माकपा भी उनके साथ आने के ने संकेत दे रही है। माकपा राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा से लड़ने के लिए तुणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के साथ हाथ मिलाने के लिए तैयार है। माकपा राज्य विधानसभा चुनाव में खाता खोलने में विफल रही थी। माकपा के नेतृत्व वाले वाम मोर्चा, कांग्रेस और नवगठित इंडियन सेक्युलर फ्रंट (आईएसएफ) ने एक गठबंधन बनाया था और विधानसभा चुनाव लड़ था। इन पार्टियों ने घोषणा की थी कि टीएमसी और भाजपा दोनों ही उनके प्रमुख दुश्मन हैं। वाम दल की तरह, कांग्रेस भी राज्य विधानसभा चुनाव में कोई सीट नहीं जीत पाई थी, हालांकि आईएसएफ एक सीट पर विजयी हुई थी। संवाददाताओं द्वारा पूछे गए इस सवाल पर कि 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को सत्ता में आने से रोकने के लिए क्या माकपा टीएमसी के साथ रहेगी, माकपा पोलिट ब्यूरो के सदस्य बिमान बोस ने कहा, 'हम किसी भी भाजपा विरोधी पार्टी के साथ काम करने के लिए तैयार हैं। कश्मीर से कन्याकुमारी तक विभाजनकारी ताकतों के खिलाफ किसी बड़े आंदोलन के लिए जब भी जरूरत पड़े है, हमारा यही रुख रहा है।' पश्चिम बंगाल वाम मोर्चा के अध्यक्ष बोस रविवार को पूर्वी मेदिनीपुर जिले के तामलुक में एक बैठक से इतर पत्रकारों से बात कर रहे थे। माकपा के शीर्ष सूत्रों ने हालांकि कहा कि बोस की टिप्पणी पार्टी के रुख में तत्काल बदलाव का संकेत नहीं देती है क्योंकि उन्होंने एक पत्रकार के सवाल के जवाब में यह बयान दिया था।

ओलिंपिक में भारत की बेटी का एक और कमाल

टोक्यो, एजेंसी भारतीय महिला मुक्केबाज लवलिना बोरगोहेन ने टोक्यो ओलिंपिक के लिए खाना होने से पहले दिए इंटरव्यू में कहा था- नेशनल में अगर कोई गोल्ड मेडल जीतता है तो लोग जल्द ही उसे भूल जाते हैं, लेकिन ओलिंपिक में मेडल जीतने पर सब हमेशा याद रखते हैं। मेरा लक्ष्य ओलिंपिक में देश के लिए मेडल जीतना है। 23 साल की लवलिना अब उस कभी न भूलने वाले मेडल से सिर्फ एक जीत की दूरी पर हैं। मंगलवार को उन्होंने उम्र में अपने से 12 साल बड़ी जर्मन प्रतिद्वंद्वी नादिने एप्टेज को हराकर 69 किलोग्राम

मोहम्मद अली की फैन लवलीना उम्र में 12 साल बड़ी मुक्केबाज को हराया

वेट कैटेगरी के क्वार्टर फाइनल में जगह बना ली है। लवलिना की अगली बाउट 30 जुलाई को होनी है। अगर वे उसमें जीत हासिल कर लेती हैं तो बॉक्सिंग में एमसी मेरीकॉम के बाद ओलिंपिक मेडल जीतने वाली देश की दूसरी महिला मुक्केबाज बन जाएंगी। मेरीकॉम ने 2012 लंदन ओलिंपिक में ब्रॉन्ज मेडल जीता था। लवलिना ने एक इंटरव्यू में बताया था कि उन्होंने मोहम्मद अली से प्रभावित होकर बॉक्सिंग करना शुरू किया था। उनके पापा टिकेन बोरगोहेन एक बार बाजार से अखबार में लपेट कर मिठाई लेकर आए थे। अखबार की उस कतरन में मोहम्मद



अली के बारे में छा था। उन्होंने पापा से मोहम्मद अली के बारे में जाना। तभी से वह बॉक्सिंग में

करियर बनाने का सपना देखने लगी। सब लोग यही कहते थे कि लड़कियां कुछ नहीं कर पाएंगी। लेकिन मेरी मां ममोनी बोरगोहेन हमेशा कहती हैं कि कुछ ऐसा करना है, जिसे आपको लोग याद रखें। लवलिना अपनी मां के इस कथन को पूरा करने के लिए एक कदम बढ़ा चुकी हैं। वे असम की पहली महिला खिलाड़ी हैं, जो ओलिंपिक में देश का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। असम के गोलाघाट जिले की रहने वाली लवलिना को अर्जुन अवॉर्ड से सम्मानित किया जा चुका है।

लवलिना ने अपनी जुड़वा बहनों लीचा और लीमा को देखकर क्रिक बॉक्सिंग करना शुरू किया था। स्पॉट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (साई) के असम रीजनल सेंटर में सिलेक्शन होने के बाद वह बॉक्सिंग की ट्रेनिंग लेने लगी थीं। उनकी दोनों बहनें क्रिक बॉक्सिंग में नेशनल स्तर पर मेडल जीत चुकी हैं। लवलिना को बचपन में काफी संघर्ष करना पड़ा। उनके पिता टिकेन बोरगोहेन की छोटी सी दुकान थी। शुरुआती दौर में लवलिना के पास ट्रेकसूट तक नहीं था। इक्विपमेंट और डाइट के लिए संघर्ष करना पड़ता था।

दोनों सदनों में विपक्ष की नारेबाजी, राज्यसभा के बाद लोकसभा की कार्यवाही स्थगित

नई दिल्ली, एजेंसी पेंगासस जासूसी मामले को लेकर संसद में हंगामा जारी है। 11 बजे राज्यसभा की कार्यवाही शुरू होते ही विपक्षी सांसदों ने नारेबाजी शुरू कर दी। वे पेंगासस जासूसी मामले में बहस की मांग कर रहे थे। ऐसे में हमामे को देखते हुए सदन की कार्यवाही पहले 12 बजे तक के लिए फिर दोपहर 2 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई है। उधर लोकसभा में भी विपक्ष की नारेबाजी के चलते कार्यवाही पहले 11.45 बजे तक और फिर 12 बजे स्थगित कर दी गई। 12 बजे जैसे ही कार्यवाही शुरू हुई तो विपक्षी सांसदों ने धरना शुरू कर दिया। इसके बाद कार्यवाही 12.30 तक के लिए स्थगित कर दी गई। इसके बाद भी हंगामा नहीं रुका तो कार्यवाही 2 बजे तक स्थगित कर दी गई। इससे पहले सोमवार को दोनों सदनों में विपक्ष ने जमकर शोर-शराबा किया, जिसकी वजह से दोनों सदनों की कार्यवाही मंगलवार सुबह 11 बजे तक के लिए स्थगित की गई थी। कांग्रेसी सांसद मनिका टैगोर ने लोकसभा में स्थगन प्रस्ताव भी दिया है। कांग्रेस ने मांग की है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह की मौजूदगी में पेंगासस मामले पर चर्चा की जाए। संसद के मानसून सेशन का यह दूसरा हफ्ता है। पहले हफ्ते में भारी हंगामे के चलते

पेंगासस मामले में संसद में हंगामा

लोकसभा और राज्यसभा से जारी नोटिस के मुताबिक इस हफ्ते सरकार ने पांच अध्यादेश लिस्ट किए हैं। इनमें होम्योपैथी सेंट्रल काउंसिल (संशोधित) अध्यादेश, द इंडियन मेडिसिन सेंट्रल काउंसिल (संशोधित) अध्यादेश, एनसीआर में एयर क्वालिटी मैनेजमेंट संबंधी अध्यादेश, द इनसॉल्वेंसी एंड बैंकरप्सी कोड (संशोधित) अध्यादेश और द एजोशियल डिफेंस सर्विसेज अध्यादेश शामिल हैं।

पेगासस मामले में संसद में हंगामा



इस हफ्ते सेशन के लिए 5 अध्यादेश लिस्टेड

पहले हफ्ते में सिर्फ 4 घंटे हुआ कामकाज मानसून सत्र के पहले हफ्ते में संसद के दोनों सदनों में विपक्षी दलों ने तीन नए केंद्रीय कृषि कानून और पेंगासस जासूसी मामले के साथ कई दूसरे मुद्दों पर जमकर हंगामा किया। पूरे सप्ताह के दौरान सिर्फ मंगलवार को राज्यसभा में चार घंटे सामान्य ढंग से कामकाज हो पाया, जब कोरोना के चलते देश में बने हालात को लेकर सभी दलों के बीच आपस में बनी सहमति के आधार पर चर्चा हुई थी।

विपक्ष के हंगामे पर मोदी का पलटवार

भाजपा सांसदों से कहा- कांग्रेस संसद नहीं चलने दे रही, उसे बेनकाब करें

संसद की कार्यवाही नहीं चलने देने को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कांग्रेस पर हमला बोला है। बीजेपी की पार्लियामेंट्री मीटिंग में अपने संबोधन में मोदी ने आरोप लगाया कि कांग्रेस जानबूझकर सदन की कार्यवाही में बाधा डालने की कोशिश कर रही है। मोदी ने बीजेपी सांसदों से कहा कि कांग्रेस और दूसरे विपक्षी दलों के ऐसे व्यवहार को मीडिया और जनता के सामने बेनकाब करें। मोदी ने पिछले हफ्ते सर्वदलीय बैठक में कांग्रेस के बयारकॉट का जिक्र भी किया। साथ ही कहा है कि कांग्रेस ने दूसरे दलों को भी बैठक में शामिल होने से रोका था। बता दें प्रधानमंत्री ने पिछले हफ्ते कोरोना की स्थिति की समीक्षा के लिए सर्वदलीय बैठक बुलाई थी। संसद में पेंगासस जासूसी मामले, कृषि कानूनों और दूसरे मुद्दों को लेकर हंगामा जारी है। 18 जुलाई को पेंगासस विवाद सामने आने के बाद से संसद में कामकाज नहीं हो पा रहा है। विपक्षी सांसद दोनों सदनों में नारेबाजी कर रहे हैं। पिछले हफ्ते तो तुणमूल सांसद ने आईटी मिनिसटर अश्विनी वैष्णव के साथ से चर्चा छैनकर फाड़ दिया था। सोमवार को कांग्रेस सांसद राहुल गांधी टैक्टिक चलाकर संसद पहुंचे थे। वे कृषि कानूनों का विरोध कर रहे थे। अकाली दल समेत कई विपक्षी दल किसानों के मुद्दे पर संसद में चर्चा की मांग कर रहे हैं। वहीं पेंगासस जासूसी मामले को लेकर संसद के दोनों सदनों में आज भी हंगामा ही रहा है।

असम-मिजोरम हिंसा पर राहुल का आरोप

गृह मंत्री अमित शाह ने देश को फिर किया निराश

नई दिल्ली (ए.) कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने असम-मिजोरम सीमा विवाद के अचानक बढ़ने से भड़की हिंसा में कई लोगों के मारे जाने पर दुःख जताते हुए मंगलवार को आरोप लगाया कि गृह मंत्री अमित शाह ने लोगों के जीवन में घृणा और अविश्वास का बीज बोकर एक बार फिर देश को निराश किया है। गौरतलब है कि असम और मिजोरम के बीच सीमा विवाद के अचानक बढ़ने के दौरान हुई हिंसक झड़प में असम पुलिस के छह जवानों की मौत हो गई और एक पुलिस अधीक्षक समेत 60 अन्य घायल हो गए। राहुल गांधी ने हिंसा से जुड़ा एक वीडियो साझा करते हुए ट्वीट किया, जो लोगों में चर्चा में है, उनके परिवारों के प्रति गहरी संवेदना है। मैं घायलों के जल्द स्वस्थ होने की कामना करता हूँ। कांग्रेस नेता ने दावा किया, गृह मंत्री ने लोगों के जीवन में घृणा और अविश्वास का बीज बोकर एक बार फिर देश को निराश किया है। भारत अब भयावह नतीजों से दोचार हो रहा है। उधर असम व मिजोरम में हिंसा के लिए एक-दूसरे की पुलिस को जिम्मेदार ठहराया और केंद्र के दखल की मांग की। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने दोनों राज्यों के मुख्यमंत्रियों से बात की और उनसे सीमा पर शांति बहाल करने कहा है।

शिल्पा से पूछताछ राज को देखते ही भड़की थीं शिल्पा, चिल्लाते हुए कहा- परिवार को बदनाम कर दिया

मुंबई, एजेंसी पोनोग्राफी केस में राज कुंद्रा की गिरफ्तारी के बाद हर दिन नए खुलासे हो रहे हैं। इस मामले में उनकी पत्नी और एक्ट्रेस शिल्पा शेट्टी से भी क्राइम ब्रांच की टीम ने 23 जुलाई को 6 घंटे की कड़ी पूछताछ की थी। इसी पूछताछ को लेकर अब नया खुलासा हुआ है। क्राइम ब्रांच सूत्रों के मुताबिक, 23 जुलाई की शाम को जब पुलिसवाले राज कुंद्रा को लेकर उनके घर पहुंचे थे, तो उनको देखते ही शिल्पा शेट्टी भड़क गईं और जोर-जोर से चिल्लाने लगीं। एक्ट्रेस ने कई पुलिसवालों के सामने चिल्लाते हुए राज से कहा कि इस केस में परिवार की बदनामी कर दी है। उनके हाथ से कई एंड्रोसमेंट और बिजनेस डीलस निकल गए हैं। उन्होंने राज से कहा कि उन्हें अपने ऐप

समझाने की कोशिश भी की। वे बार-बार खुद को बेगुनाह बता रहे थे और कह रहे थे कि उनके खिलाफ बने इस केस का कोई आधार नहीं है। राज ने शिल्पा से कहा कि उन्होंने पोनो नहीं बल्कि एरोटिका मूवीज बनाई है। क्राइम ब्रांच के एक सीनियर ऑफिसर ने कहा है, इस केस में शिल्पा शेट्टी का कोई रोल नहीं है। अब तक इस केस में उनकी सल्लसता नहीं मिली है। इसलिए हम उनसे दोबारा कोई सवाल नहीं पूछने वाले हैं। हालांकि, क्राइम ब्रांच ने शिल्पा शेट्टी को शिल्पा शेट्टी जोर-जोर से लेनी। यह भी जानकारी सामने आ रही है कि शिल्पा को रोता देख राज कुंद्रा की आंखों में पानी आ गया था। बाद में राज कुंद्रा ने शिल्पा को

मेरे सारे प्रोजेक्ट्स हाथ से निकल गए

ओटीटी प्लेटफॉर्मस पर कंटेंट बहुत ज्यादा अश्लील होता है। उन्होंने मुंबई पुलिस से कहा कि उनके पति पर लगे आरोप सही नहीं हैं। उन्होंने पोनो और एरोटिका का अंतर बताने की कोशिश की। शिल्पा ने माना-कुछ बिजनेस में राज की पार्टनर थीं राज से बात करने के बाद शिल्पा ने अपने पर्सनल लॉयर के सामने पुलिस के सवालों का जवाब दिया। उनसे लगातार पांच घंटे तक का कोई रोल नहीं है। इसमें उनकी पर्सनल लाइफ से उनकी सल्लसता नहीं मिली है। इसलिए हम उनसे दोबारा कोई सवाल नहीं पूछने वाले हैं। हालांकि, क्राइम ब्रांच ने शिल्पा शेट्टी को शिल्पा शेट्टी जोर-जोर से लेनी। यह भी जानकारी सामने आ रही है कि शिल्पा को रोता देख राज कुंद्रा की आंखों में पानी आ गया था। बाद में राज कुंद्रा ने शिल्पा को

राज कुंद्रा को 14 दिन की न्यायिक हिरासत

पोनो फिलमें बनाने और उन्हें ऐप के जरिए दिखाने के मामले में गिरफ्तार राज कुंद्रा की पुलिस कस्टडी आज खत्म हो गई। कुछ ही घंटे पहले उन्हें मुंबई के एस्टेलेनड कोर्ट में पेश किया गया। जहां डिफेंस की मजबूत दलील के बाद अदालत ने कुंद्रा को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। हालांकि, क्राइम ब्रांच की टीम ने कुंद्रा की कस्टडी बहाल की अपील की थी। सूत्रों के मुताबिक, पिछले एक सप्ताह के दौरान पुलिस के हाथ राज कुंद्रा के खिलाफ कई सबूत लगे हैं। लेकिन उनके साथ काम करने वालों को सामने बैठाकर पूछताछ करना बाकी है। यही नहीं इलेक्ट्रॉनिक एविडेन्स को लेकर भी कुंद्रा से पूछताछ होनी है। पुलिस ने आज अदालत में कुंद्रा के बैंक खातों की जानकारी भी दी है। सुनवाई के दौरान अदालत ने कहा कि कुंद्रा को लेकर 8 दिन से पूछताछ हो रही है। उनसे बहुत पूछताछ हो चुकी है। अब आप (मुंबई पुलिस) और सबूत लेकर आओ। कुंद्रा के साथ उनकी कंपनी के आईटी प्रमुख रयान थॉर्प को भी 14 दिनों के लिए नौ में भेज दिया गया है। मुंबई पुलिस की मानें तो कुंद्रा के बयान और इलेक्ट्रॉनिक एविडेन्स के आधार पर जरूर ही इस मामले में कुछ और लोगों की गिरफ्तारी हो सकती है। वहीं एक्ट्रेस शिल्पा चोपड़ा को भी पुलिस ने आज पूछताछ के लिए बुलाया है।

DECENT WAY TRADE WORLD

देश में आज दो गंभीर समस्या तेजी से बढ़ रही हैं वीमारी और बेरोजगारी इन दोनों समस्याओं का एक ही समाधान

DECENT WAY TRADEWORLD PVT. LTD.

हिंदुस्तान की आयुर्वेदिक प्रॉडक्ट के क्षेत्र में तेजी से बढ़ती कंपनी के साथ अपना खुद का व्यापार शुरू करें और लाखों कमाएं

Arvind Purohit Founder CMD

Rupendra Chauhan MD

Abhishek Chauhan Director Managing head

ब्रांच ऑफिस: 104 रजनीगंधा अपार्टमेंट, गोले का मंदिर ग्वालियर मध्य प्रदेश

Email: decentwaytradeworld@gmail.com web: www.dwtw.in, cont: 9522502121

SHARMA PAINTING CONTRACTOR

Wall Putty, Spray Polish

All type of Painting Work Done Here

+91 9340333403 CLICK HERE FOR CALL

+91 9340333403 CLICK HERE FOR WHATSAPP

rajanalsharmamp3997@gmail.com

Bakharopara, kundagaon Road, Narayanpur (mp)

HOME DRYWALL & PAINTING

RAJANAL SHARMA

Building, Commercial and A to Z Building Construction Work.

DESIGN BY: DIGITALINDIACOMPANY.IN DVC. WEBSITE: MINI WEB CLICK HERE

संक्षिप्त समाचार

इन फीडर्स पर आज विद्युत प्रवाह बंद रहेगा

शिवपुरी। आवश्यक रखरखाव का कार्य किए जाने हेतु 33 के.व्ही.लुकवासा, माड़ा, भैसाना, सतनवाड़ा, नोहरी, रोनाखेडी, जसराजपुर एवं सुभाषपुर फीडर पर 28 जुलाई को विद्युत प्रवाह बंद रहेगा। 28 जुलाई को लुकवासा एवं माड़ा फीडर के बंद रहने से प्रातः 10 बजे से शाम 4 बजे तक 33/11 के.व्ही.उपकेन्द्र देहरा सड़क, लुकवासा एवं केलधर तथा 33/11 के.व्ही.उपकेन्द्र माड़ा अकाश्री एवं रौद से जुड़े क्षेत्र प्रभावित रहेंगे। इसी प्रकार भैसाना, सतनवाड़ा, नोहरी, रोनाखेडी, जसराजपुर एवं सुभाषपुर फीडर के बंद रहने से प्रातः 9 बजे से शाम 6 बजे तक 33/11 के.व्ही.उपकेन्द्र भैसाना एवं झिरी से जुड़े समस्त क्षेत्र, 33के.व्ही.सतनवाड़ा से जुड़े समस्त क्षेत्र एवं उच्च दाब उपभोक्ता, 33/11 के.व्ही.उपकेन्द्र नोहरी, रोनाखेडी, जसराजपुर, सिरसौद एवं टार्रा से जुड़े समस्त क्षेत्र तथा सुभाषपुर, धौलागड़ एवं सतनवाड़ा उपकेन्द्र से जुड़े समस्त क्षेत्र एवं एच.टी.उपभोक्ता प्रभावित रहेंगे।

जिले में 307.28 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज

शिवपुरी। जिले में 01 जून 2021 से अभी तक 307.28 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज हुई है। जिले में गत वर्ष आज दिनांक तक 219.84 मि.मी. औसत वर्षा हुई थी। भू-अभिलेख शिवपुरी के अधीक्षक ने बताया कि जिले की औसत वर्षा 816.3 मि.मी. है। गत वर्ष जिले में कुल 822.4 मि.मी. वर्षा रिकॉर्ड की गई थी। उन्होंने बताया कि अभी तक शिवपुरी में 267 मि.मी., बैराड़ में 431 मि.मी., पोहरी में 289 मि.मी., नरवर में 446 मि.मी., करैरा में 289 मि.मी., पिछोर में 244 मि.मी., कोलारस में 320 मि.मी., बदरवास में 209 मि.मी. एवं खनियाधाना में 270 मि.मी. वर्षा दर्ज हुई है।

अब 28 जुलाई तक ले सकेंगे आरटीई के तहत विद्यालय में प्रवेश

शिवपुरी। शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई) के तहत, निजी विद्यालयों में निःशुल्क प्रवेश के लिए पात्र बच्चों को विद्यालयों में प्रवेश लेने की अंतिम तिथि 28 जुलाई तक बढ़ाई गई है। पूर्व में यह तारीख 26 जुलाई 2021 निर्धारित थी। संचालक राज्य शिक्षा केंद्र धनराज एस ने बताया कि मौसम की विपरीत परिस्थितियों और पात्र बच्चों के हित को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में प्रवेश लेने की अंतिम तिथि को 2 दिन बढ़ाया गया है। श्री धनराज ने बताया कि प्रदेश के सभी जिला परियोजना समन्वयक को निर्देश जारी किए हैं कि आवंटन पश्चात संबंधित बच्चे द्वारा आवंटित स्कूल में निःशुल्क प्रवेश के लिए उपस्थित होने के साथ ही अशासकीय स्कूल द्वारा मोबाइल एप के माध्यम से बच्चों की फोटो लेकर निःशुल्क प्रवेश दर्ज कराना सुनिश्चित कराये। इसके साथ ही यदि किसी अशासकीय स्कूल द्वारा वर्तमान में स्कूल का संचालन बंद कर दिया गया है या कोई अल्पसंख्यक स्कूल में किसी बच्चे का आवंटन हुआ है, तो ऐसे स्कूलों की जानकारी 27 जुलाई 2021 के शाम 5 बजे तक राज्य शिक्षा केंद्र को उपलब्ध कराए, जिससे ऐसे बच्चों को दूसरे चरण की लॉटरी प्रक्रिया में अन्य स्कूल को चुनने का अवसर उपलब्ध कराया जा सके। उल्लेखनीय है कि निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के प्रभावी क्रियान्वयन और कमजोर वर्ग एवं वंचित समूह के बच्चों को निजी स्कूलों में निःशुल्क प्रवेश के लिए सत्र 2021-22 में ऑनलाइन लॉटरी के माध्यम से स्कूल का आवंटन किया गया था।

कक्षा 12वीं के परीक्षा परिणाम 29 जुलाई को

शिवपुरी। माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा आयोजित ह्यर सेकेण्डरी (12वीं) परीक्षा, ह्यर सेकेण्डरी व्यवसायिक सर्टिफिकेट परीक्षा और ह्यर सेकेण्डरी (अंध, मूक बधिर) श्रेणी के परीक्षा परिणाम 29 जुलाई को दोपहर 12 बजे घोषित किए जाएंगे। मंडल ने विद्यार्थी और अभिभावक के लिए विभिन्न पोर्टलों के माध्यम से परीक्षा परिणाम जानने की सुविधा उपलब्ध करायी है।

टेलेंट सर्च में ग्रामीण खिलाड़ियों की भागीदारी बढ़ाये: एसपी श्री चन्देल

जिले के प्रतिभावान खिलाड़ियों को टेलेंट सर्च द्वारा चयन के संबंध में बैठक सम्पन्न

शिवपुरी। जिले के ग्रामीण व शहरी प्रतिभावान खिलाड़ियों को टेलेंट सर्च के माध्यम से चयन किये जाने हेतु पुलिस अधीक्षक राजेश सिंह चंदेल की उपस्थिति में मंगलवार को पुलिस कंट्रोल रूम में बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिला शिक्षा अधिकारी दीपक पाण्डेय, सहायक आयुक्त आर.एस. परिहार, संभागीय खेल और युवा कल्याण अधिकारी एम.के. धौलपुरी, जिला क्रीडा अधिकारी महेन्द्र सिंह तोमर, हॉकी खेल संघ से साहब सिंह कुशवाह, फुटबॉल संघ से शाहरुख खान, एथलेटिक्स संघ से पवन शर्मा, विकास खण्ड पर पदस्थ ग्रामीण युवा समन्वयक पोहरी से श्रीमती सुशीला टोपों, नरवर से सुश्री भावना लखेरा, करैरा से अजयवीर सिंह, पिछोर से अतर सिंह गौड़, खनियाधाना से प्रदीप राजौरिया, कोलारस से रवि प्रकाश सिंह जादौन, बदरवास से कु. वर्षा कबीर पंथी, शिवपुरी से कमल सिंह बाथम उपस्थित रहे। पुलिस अधीक्षक ने जिला शिक्षा अधिकारी, सहायक आयुक्त, आदिम जाति विकास, खेल संघ संस्थाओं से उपस्थित सदस्यों निर्देशित किया कि जिला मुख्यालय में आयोजित टेलेंट सर्च में विकास खण्ड से लेकर ग्रामीण अंचल के अध्ययनरत, गैर अध्ययनरत खेलों में रुचि



रखने वाले खिलाड़ियों को अधिक से अधिक संख्या में इस चयन ट्रायल में शामिल होने हेतु प्रोत्साहित किया जाए। संभागीय खेल और युवा कल्याण अधिकारी एम.के. धौलपुरी ने बताया कि खेल और युवा कल्याण विभाग अंतर्गत संचालित कुश्ती, कराते, जूडो, बॉक्सिंग, फैंसिंग, ताईक्रांडो, पुरुष हॉकी, वाटर स्पोर्ट्स सेलिंग, वाटर स्पोर्ट्स क्याकिंग केनोडिंग, वाटर स्पोर्ट्स रोइंग, घुड़सवारी, शूटिंग, एथलेटिक्स, महिला हॉकी, पुरुष क्रिकेट, बैडमिंटन, तीरंदाजी, ट्रायथलॉन की वर्ष 2021 हेतु चयन से पूर्व जिला/संभाग स्तर पर खिलाड़ियों का बेटरी टेस्ट (फिजिकल फिटनेस) टेस्ट कर राज्य खेल अकादमी हेतु चयन किया जाना है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2021 में राज्य खेल अकादमी हेतु चयन ट्रायल में

सम्मिलित होने हेतु खिलाड़ियों को अपना पंजीयन विभागीय वेबसाईट [http:// dsywmp.gov.in /TalentSearchw021](http://dsywmp.gov.in/TalentSearchw021) पर ऑनलाईन आवेदन करना आवश्यक है। वे खिलाड़ी ऑनलाईन पंजीयन कराने के उपरांत ही जिला स्तर पर आयोजित बेटरी टेस्ट (फिजिकल फिटनेस) में खिलाड़ी को सम्मिलित किया जायेगा। चयन ट्रायल में सम्मिलित होने वाले खिलाड़ियों को अपने साथ आधार कार्ड, जन्म तिथि का प्रमाण पत्र साथ लाना अनिवार्य होगा। सभी खिलाड़ियों को कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करना अनिवार्य है। संभागीय खेल अधिकारी ने जिले के प्रतिभावान खिलाड़ियों से अपील की है कि वे कुश्ती, कराते, जूडो, बॉक्सिंग, फैंसिंग, ताईक्रांडो,

पुरुष हॉकी, वाटर स्पोर्ट्स सेलिंग, वाटर स्पोर्ट्स क्याकिंग केनोडिंग, वाटर स्पोर्ट्स रोइंग, घुड़सवारी, शूटिंग, एथलेटिक्स, महिला हॉकी, पुरुष क्रिकेट, बैडमिंटन, तीरंदाजी, ट्रायथलॉन खेलों में रूची रखने वाले खिलाड़ी अधिक से अधिक संख्या में चयन ट्रायल में सम्मिलित हों। चयन ट्रायल श्रीमंत माधवराव सिंधिया जिला खेल परिसर जाधव सागर के पास पुरानी शिवपुरी पर होंगे। जो खिलाड़ी उक्त खेलों में राज्य/राष्ट्रीय स्तर पर पदक विजेता रहे है वे सीधे संभाग स्तर पर स्किल टेस्ट में सम्मिलित हो सकेंगे। पदक विजेता खिलाड़ी को ट्रायल के समय अपने पदक विजेता प्रमाण पत्र साथ लेकर आना अनिवार्य होगा।

तेज बहाव में रफ्ट पर 5 सवारियों से भरी टवेरा फंसी, ग्रामीणों ने निकाला

तेज वारिशा से शिवपुरी श्योपुर मार्ग बंद कर्नो उफान पर सिंध के उफान से मड़ीखेड़ा डैम का बड़ा जल स्तर 326 मीटर हुआ

शिवपुरी। शिवपुरी जिला सहित आसपास के अंचल में बीती रात से हो रही जोरदार वारिशा के कारण नदियां और नाले उफान पर हैं। कोलारस क्षेत्र के सिंध भड़ौता रफ्ट पर सिंध नदी के उफान से एक टवेरा वाहन फंसी गया। वाहन में सवारियों भरी हुई थी। वहीं जब ग्रामीणों ने वाहन को फंसे देखा तो तुरंत रेस्क्यू कर वाहन में फंसे लोगों को निकाल लिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार रौद निवासी धर्मेन्द्र भदौरिया, शिवसिंह भदौरिया, रामहेत गुर्जर, लज्जामा गुर्जर और कुसमा बाई रौद से टवेरा गाड़ी से ग्वालियर जा रहे थे। जैसे ही यह टवेरा कार सिंध नदी के भड़ौता क्षेत्र में पहुंची तो वहां रफ्ट के एक छोर पर सिंध का पानी रफ्ट के ऊपर से बह रहा था लेकिन दूसरे रफ्ट पर पानी नहीं था। इसी बीच चालक ने टवेरा को रफ्ट से निकालने का प्रयास किया



इसी समय पानी का तेज बहाव हो गया और दोनों छोरों पर पानी आ गया। रफ्ट पर गाड़ी फंसी गई। स्थानीय ग्रामीणों ने घटनाक्रम देखा तो मदद के लिए वे आगे आए और ट्यूब व रिसियों के सहारे लोगों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। एसडीओपी श्री वर्मा ने बताया कि सभी सवारियों को सुरक्षित रेस्क्यू कर निकाल लिया गया है। पुलिस और रेस्क्यू दल भी समय पर वहां पहुंच गया।

मड़ीखेड़ा डैम में भरा पानी अंचल में हुई जोरदार बारिश के नतीजे में अटल सागर डैम में पहली बार सिंध नदी के पानी का प्रवेश होगा जिसे लेकर अलर्ट घोषित कर दिया गया है। मड़ीखेड़ा डैम के प्रभारी वीपी कौशिक ने बताया कि सभी प्रबंध पूरे कर लिए गए हैं। और जल स्तर पर लगातार निगाह रखी जा रही है। डैम का कुल भराव 346.25 मीटर तक है, इस लिहाज से अभी डैम खाली है और मंगलवार दोपहर तक उसका जल स्तर 326.75 मीटर हुआ है। बता दें कि अटल सागर डैम को भरने के लिए सिंध नदी में उफान आना जरूरी रहता है और यह उफान तब आता है। जब बदरवास से लेकर गुना अशोकनगर, विदिशा और भोपाल तक जबरदस्त बारिश होती है। बीते दो-तीन दिनों से हुई बारिश के नतीजे में पहली बार सिंध उठान पर आई है। उम्मीद की जा रही है कि यह सिलसिला जारी रहा तो डैम भरने के हालात निर्मित हो जाएंगे।

शासकीय सेवकों को एक जुलाई 2020 एवं 1 जनवरी 2021 को देय वार्षिक वेतन वृद्धि मिलेगी

शिवपुरी। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के निर्देश पर शासकीय सेवकों को एक जुलाई 2020 एवं 1 जनवरी 2021 तथा 1 जुलाई 2021 को देय वार्षिक वेतन वृद्धि मिलेगी। वित्त विभाग ने सभी विभागों के लिये आज इस आशय के निर्देश जारी कर दिये हैं। वित्त मंत्री जगदीश देवरा ने कहा कि प्रदेश सरकार कर्मचारी हितैषी है प्रदेश के शासकीय अधिकारी-कर्मचारियों को मिलने वाले सभी स्वयं को नियमानुसार दिया जायेगा। वित्त विभाग ने स्पष्ट किया है वार्षिक वेतन वृद्धि जुलाई / जनवरी माह में देय होगी है। चूंकि राज्य शासन द्वारा वेतन वृद्धि को स्थागित करने या रोकने के आदेश नहीं किये गये हैं इसलिए शासकीय सेवकों को वार्षिक वेतन वृद्धियों का भुगतान पात्रता के अनुसार किया जायेगा। जिन शासकीय सेवकों की वार्षिक वेतनवृद्धि जनवरी 2022 में देय होगी उनके संबंध में भी गणना के निर्देश दिये दिये हैं। जुलाई 2020 /जनवरी 2021 की वेतन वृद्धि के वित्तीय लाभ / एरियर्स की राशि के संबंध में अलग से निर्णय लिया जायेगा। राज्य शासन के अधीन सभी उपक्रम निगम, मंडल, स्थानीय निकाय विकास प्राधिकरण, आयोग, विश्वविद्यालय के कर्मियों की भी जुलाई 2020 और जनवरी 2021 की वार्षिक वेतनवृद्धि तत्सम देय नहीं रही थी। अतः इस संबंध में निर्देश संबंधित प्रशासकीय विभाग द्वारा अलग से जारी किये जायेंगे। वेतन वृद्धि के लिए जो फार्मुला वित्त विभाग ने दिया है उसके अनुसार यदि शासकीय सेवक का वेतनमान लेवल 12 (56100-177500) है और जून 2020 में मूल वेतन रूपये 69000 है तो एक जुलाई 2020 में काल्पनिक वार्षिक वेतनवृद्धि 71100 होगी।

मंहगाई एवं बेरोजगारी को रोकने मप्र कांग्रेस कमेटी ने सौपा ज्ञापन

शिवपुरी। बढ़ती मंहगाई एवं बेरोगारी के खिलाफ मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी ने राज्यपाल के नाम एक ज्ञापन कलेक्टर के नाम सौपा। ज्ञापन में बताया गया कि बेतहासा मूल्यवृद्धि के कारण बेरोजगारी एवं पेट्रोलियम पदार्थों की बेतहासा मूल्यवृद्धि के कारण मध्यप्रदेश का जनमानस बहुत पीड़ित है। वहीं बिजली बिलों में अनाप शनाप टैक्स जोड़कर गरीबों को पीड़ित किया जा रहा है। जिसको लेकर ज्ञापन सौपा गया जिसमें निम्न मांगें रखी गईं उनमें पेट्रोलियम पदार्थ पेट्रोल, डीजल, गैस रेट मध्यप्रदेश में अत्यधिक है यूपी



राज्य की तर्ज पर राज्य टेक्य को कम कर मूल्य वृद्धि कम कराय जाए जिसमें जनमानस को लाभ लिंगा। किसानों के ऊपर तीन काले कानून भारत सरकार द्वारा थापे गए है जिनमें सभी किसान आहत हैं मंडी समाप्त होने, स्टॉक लिमिटेड खत्म होने का निराकरण किया जाए। बिजली बिल मार्च 2020 के पूर्व की स्थिति में 100 में 100 यूनित करया जाए। पानी की समस्या का हल करया जाए। बेरोजगारी का समस्या का हल करया

आदिवासी परिवारों की काबिज भूमि पर जबरन कब्जा करने का प्रयास

मारपीट, घरों में लगाई आग, पुलिस से मांगी सुरक्षा एसपी को दिया शिकायती आवेदन, उचित कार्यवाही की मांग

शिवपुरी। जिले के नरवर क्षेत्र की मगरीनी चौकी अंतर्गत आने वाले ग्राम किशनपुर व झण्डपुर के ग्रामीणजनों ने पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंचकर अपनी आपबीती बताई और एसपी की अनुपस्थिति में एसपी से मामले में उचित कार्यवाही की मांग कर न्याय व

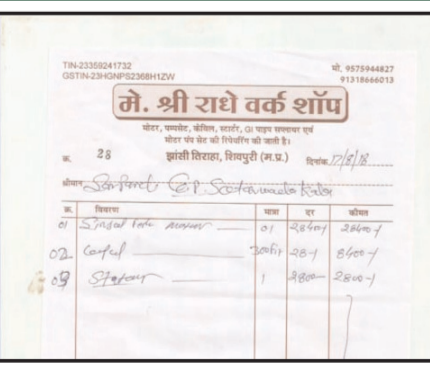
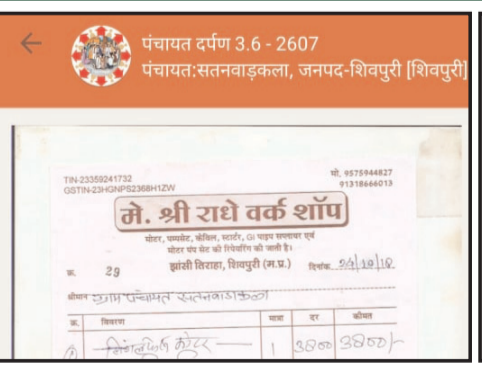


सुरक्षा की गुहार लगाई। इस मामले में एसपी द्वारा मौके पर ही संबंधित थाना प्रभारी को निर्देशित कर मामले की जांच कर दोषियों के खिलाफ कार्यवाही किए जाने का आश्वासन पीड़ित आदिवासी परिवारों को दिया गया। पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंचकर अपनी आपबीती बताते आए ग्राम किशनपुर व झण्डपुरा के ग्रामीण सूखा

आदिवासी, अशोक आदिवासी, रामकुमार, राहुल, मुन्नी बाई, लील बाई, नेमा बाई, रामबाई, कल्ले बाई, राजाबेटी किन्ता आदिवासी सहित करीब दर्जनों आदिवासी परिवारों ने अपनी फरियादी एसपी की अनुपस्थिति में एसपी प्रवीण कुमार भूरिया को सुनाई। यहां बताया कि वह सभी ग्राम किशनपुर व झण्डपुरा के निवासी है जहां बीती 15 जून के रोज क्षेत्र के दबंग लोग रामनिवास पुत्र भारत सिंह गुर्जर निवासी पुरानी मगरीनी पुलिस चौकी मगरीनी पुलिस थाना द्वारा 294,323,506,34 व एससी एसटी हम आदिवासियों की भूमि पर जबरन कब्जा करने का प्रयास किया जा रहा है जब उसे रोका जाता है तो आरोपी जातिगत गालियां देकर आदिवासियों को जान से मारने की धमकी देकर डराता रहता है इसी क्रम में 15 जून को भी इन आदिवासी परिवारों के साथ रामनिवास गुर्जर व उसके अन्य साथियों ने मिलकर मारपीट की, काबिज भूमि पर जबरन कब्जा का प्रयास किया, मारपीट कर घरों में आग लगाकर क्षति पहुंचाई और जान से मारने की धमकी देकर वहां से गए। जिस पर मगरीनी चौकी ने आरोपियों के विरुद्ध धारा 294,323,506,34 व एससी एसटी हम आदिवासियों की भूमि पर जबरन कब्जा करने का प्रयास किया जा रहा है

ग्राम पंचायत सतनवाड़कला में सरपंच सचिव ने पाताल से धरातल पर पानी लाने के लिए किए लाखों रुपये खर्च

में.श्री राधे वर्क शॉप में पंचायतकर्मियों ने डाले लाखों रुपये के बिल, लेकिन आजतक ठिकाने का पता नहीं क्या सहायक आयुक्त राज्यकर वृत्त शिवपुरी करेगा कार्रवाई..? पंचपरमेश्वर योजना की राशि का हुआ जमकर दुरुपयोग, नहीं हुआ गाइड लाइन का पालन



इस तरह हुआ फर्जी बिलों के आधार पर भुगतान

शिवपुरी। प्रशासन वित्तीय मामलों में पारदर्शिता के लिए चाहे कितने भी जतन कर लें लेकिन उनके तोड़ बिचैलिया निकाल ही लेते हैं। पंचपरमेश्वर की राशि के दुरुपयोग को रोकने के लिए प्रशासन ने भले ही नई गाइडलाइन एपीओ के जरिये भुगतान को तय कर दिया हो। मगर जनपद पंचायत शिवपुरी के नुमाइदों ने सारी गाइडलाइन को ठेगा दिखाते हुए प्रशासन की मंशा पर पानी फेर दिया । जनपद

पंचायत शिवपुरी के अन्तर्गत आने वाली ग्राम पंचायत सतनवाड़कला सहित कई ग्राम पंचायतों में पंचपरमेश्वर योजना की राशि का जमकर दुरुपयोग किया गया है। जिसमें पंचायतकर्मियों ने एपीओ की मिलीभगत से मनचाहे बिलों को लगाकर वित्तीय आहरण कर लिया गया। सरपंच, सचिव, रोजगार सहायक के साझा खाते से निकलने वाली राशि को फर्जी बिलों के सहारे निकाला और हजम कर गए। गौरतलब है कि पंचपरमेश्वर योजना की राशि पंचायतीराज संचालनालय भोपाल द्वारा ग्राम पंचायत

के विकास के लिए पंचायतों के खातों में प्रथक-प्रथक रूप से आती है। जिससे पंचायतों गांव के विकास, निर्माण कार्य व अन्य वित्तीय खर्चों को पूरा करती है। इसके भुगतान के लिए बिल-बाउचर संलग्न करते है। साथ ही सरपंच, सचिव के मोबाइल पर सहमति के बाद ही भुगतान होता है। केवल राशि निकालने के लिए करते हैं फर्मी का उपयोग जनपद पंचायत शिवपुरी में इस राशि को कैसे

पंचायत कर्मों हड़प सके इसके लिए फर्जी फार्मों के नाम पर रजिस्ट्रेशन कराकर पंचायतों से राशि आहरित की गई। पंचायत कर्मियों ने निर्माण अपने अनुसार कराया और उसका भुगतान भी अपने अनुसार करा ही लिया। इसमें फर्जी फार्मों का जोएसटी सहित अन्य खर्च दिए गए। जिससे उन्होंने अपनी फर्मी के बिल बनाकर उन्हें दिए। हकीकत में ये फर्मी जमीनी स्तर पर ही हैं नहीं। इसलिए इन्हें सिर्फ पंचायतों ने अपनी राशि आहरित करने के लिए इस्तेमाल करती हैं।

सचिव ने पानी कि सुविधा (मोटर,केवल,पाइप,रिपेयरिंग) के लिए लाखों रुपये के बिल डाले है। और वहीं में.श्री राधे वर्क शॉप फर्म में सतनवाड़कला सरपंच-सचिव ने सामग्री के नाम पर भी लाखों रुपये के बिल डाले है जबकि यह फर्म कि धरातल पर कोई भी दुकान संचालित नहीं है।यह फर्म के बिल पंचायत में सिर्फ और सिर्फ राशि निकालने के लिए डाले गये है।यह करने से एक तरफ फर्म संचालक और सरपंच-सचिव को लाभ हुआ तो दूसरी तरफ शासन को लाखों रुपये के टेक्स कि हानि हुई है।अब देखना होगा कि सहायक आयुक्त राज्यकर वृत्त शिवपुरी इस फर्म संचालक के खिलाफ क्या कार्रवाई करता है..? जनपद सीईओ भ्रष्टाचार को अपनी आंखों एवं कानों से अपनी जनपद का भ्रष्टाचार का समाचार देखना एवं सुनना नहीं चाहते जिसके कारण जनपद सीईओ से कई मीडिया कर्मियों के फोन तक ब्लैक लिस्ट में डाल रखे हैं एवं व्हाट्सएप नंबर भी ब्लॉक कर रखे हैं इस बात पर यह प्रतीत होता है कि इस पूरे कारनामे में कहीं ना कहीं जनपद सीईओ की सहभागिता दिखाई देती है जिसके कारण वह मीडिया कर्मियों के फोन तक उठाना उचित नहीं समझते हैं।

तीन घंटे की तेज बारिश ने शहर में मचाई अफरा-तफरी



नपा कर्मचारियों ने फोन नहीं किए रिसीव, अफसर सफाई देते रहे

शहर में बारिश पका पानी भरने की मुख्य वजह स्थानीय लोगों द्वारा नालों को रोककर कब्जा करना है। बस स्टैंड, बजरिया, गोल मार्केट आदि जगहों पर नालों पर निर्माण कर लिया गया। इस वजह से बारिश का पानी निकासी नहीं हो पा रही है। बारिश के पानी को लेकर स्थानीय लोगों द्वारा कर्मचारियों को फोन लगाए जाना शुरू किया उनके फोन नहीं उठे। वहीं अफसर, अपनी सफाई में कहते रहे कर्मचारी फ्री होते ही जलनिकासी के प्रबंधन किए जाएंगे। लहार चुंगी पर जनरेटर से पानी निकला गया, तीन जेसीबी और दो टैंकर पानी निकालने में लग रहे, 12 से अधिक स्थानों पर हुआ जल भराव सफाई कर्मचारी और नपा दरोगा को जारी किए निर्देश, जल निकासी

भिण्ड। सावन मास के तीसरे दिन भिंड शहर में रिमझिम और तेज बारिश, रूक रूक होती रही। बारिश की वजह से शहर की सड़कें जलमग्न हो गईं। कई कॉलोनी और मोहल्लों में बारिश का पानी घरों में भर गया। जिससे लोगों में अफरा तफरी मच गई। नगरपालिका को व्यवस्थाओं की पोल खुलते ही लोगों में आक्रोश पनप उठा। लहार रोड़ पर स्थानीय लोगों द्वारा सड़क पर जाम लगा दिया। करीब दो घंटे के जाम में क

ई वाहन फंसे रहे। पुलिस की समझाइश के बाद जाम खुल सका। सड़क पर जाम लगाकर प्रदर्शन करने वाले महिला पुरुषों का कहना था कि नगर पालिका लापरवाही से घरों में पानी भरा। मंगलवार को भिंड जिले की हर तहसील व कस्बे में अच्छी बारिश हुई। बारिश की वजह से सबसे ज्यादा परेशानी भिंड शहरवासियों को उठानी पड़ी। यहां नवादा, लहार चुंगी,

अटेर रोड़, शास्त्री कॉलोनी, हाडसिंग कालोनी, गौरी का किनारे पर सड़कें जलमग्न हो गईं। यहां बारिश का पानी सड़कों पर हिलौरे मारता रहा। बारिश तेज होते ही यह पानी घरों में घुस गया। इस वजह से लोगों को भारी नुकसान उठाना पड़ा।

जलनिकासी के प्रबंध फेल

भिण्ड। राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के

मुख्य दोषी यहां की नगर पालिका है। नगर पालिका के अफसरों द्वारा कागजी तौर पर नालों की सफाई को लेकर अभियान चलाया गया। हकीकत यह है कि हकीकत यह है कि बारिश से पहले नाले की सफाई एक छोर से दूसरे छोर तक नहीं कराई गई। यहां वहां नालों की सफाई करके फोटों खिंचे रहे। वहीं शहर में सीवर लाइन नहीं है। जल निकासी के प्रबंध फेल होने से यह समस्या बनी।

में लगे कर्मचारी,

इनका कहना है :

शहर में नपा कर्मचारी जल निकासी में लगे हुए हैं। नालों की सफाई के बाद लोगों द्वारा कचरा डालने की वजह से यह स्थिति बनी। हर जगह कर्मचारी, मशीनरी के साथ लगे हुए हैं। सुरेंद्र शर्मा, सीएमओ, नगर पालिका, भिंड

डब्ल्यूडब्ल्यूई रेसलर सौरभ गुर्जर का मेहगांव में हुआ भव्य स्वागत

गुर्जर किरण पत्रिका संपादक सरदार सिंह गुर्जर ने किया अभिनन्दन पत्र भेंट



मेहगांव। डब्ल्यूडब्ल्यूई विजेता एवं भारत के महान रेसलर सौरभ गुर्जर का नाम अभी तक हमने आपने टीवी और चैनलों पर सुना और देखा था, लेकिन आज दंदरौआ धाम पर हनुमानजी के दर्शन एवं संत श्री रामदास जी महाराज से आशीर्वाद प्रदान करने के बाद भिंड निकलते समय मेहगांव सर्किट हाउस पर गुर्जर किरण पत्रिका परिवार द्वारा स्वागत सम्मान एवं प्रेस वार्ता का आयोजन किया, जिसमें रेसलर सौरभ गुर्जर ने युवाओं को शिक्षित होने और खेलों की ओर बढ़ने की बात कही, साथ ही वर्तमान में चल रही कोरोना महामारी को

भी देखते हुए सभी प्रदेशवासियों से अपील करते हुए कहा कि हम सब वैक्सिनेशन जरूर कराएं ताकि कोरोना जैसी महामारी से जंग जीती जा सके। मेहगांव सर्किट हाउस पर गुर्जर किरण पत्रिका द्वारा अभिनन्दन पत्र भेंट कर संपादक सरदार सिंह गुर्जर ने स्वागत सम्मान किया। उन्होंने कहा कि हमारे भिंड जिले की तपोभूमि पर रेसलर सौरभ गुर्जर का प्रथम आगमन हुआ है, मेहगांव में

सहित सैकड़ों की संख्या में लोग मौजूद थे। साथ ही स्वागत करने वालों में झूलयास मोहम्मद खान, मनीष शिवहरे, अकिंत तोमर, राजेश गुर्जर, शिवम कुशवाहा, शिवम जैन, संदीप कांकर, आशीष शर्मा, श्याम गुर्जर, सतेंद्र डोयला, विक्रम गुर्जर, अनिल गुर्जर, शिवम दंडोतिया, प्रवेश शुक्ला, हरनाम सिंह परमार, राजवीर गुर्जर, मोहन सिंह गुर्जर सहित सैकड़ों की संख्या में लोग मौजूद रहे। फोटो नम्बर-01

जिला जेल में विधित साक्षरता शिविर सम्पन्न

भिण्ड। राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के

निर्देशानुसार एवं प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण भिण्ड अक्षय कुमार द्विवेदी के मार्गदर्शन में अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश/सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण भिण्ड सुनील दण्डोतिया एवं अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश जिला न्यायालय भिण्ड समरेश सिंह के द्वारा जिला जेल भिण्ड में विधिक साक्षरता शिविर के साथ ही साथ जिला जेल भिण्ड का निरीक्षण भी किया गया। शिविर में अपर जिला न्यायाधीश/सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण भिण्ड सुनील दण्डोतिया के द्वारा उपस्थित बंदियों को म090 विधिक सेवा अधिनियम के अंतर्गत बंदियों के अधिकारों के संबंध में जानकारी दी गई। इसी के साथ ही साथ अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश समरेश सिंह के द्वारा उपस्थित बंदियों को पत्रको अधिनियम एवं प्लीबारागनिंग, निःशुल्क विधिक सहायता बंदियों के अधिकारों के बारे में भी विस्तार पूर्वक चर्चा की गई। फोटो नम्बर-09



शहीदों की शहादत को हम कभी नहीं भुला पाएंगे : संजीव नायक

भिण्ड। कारगिल विजय दिवस पर मंगलवार को लहार नगर में कारगिल विजय दिवस के मौके पर एक दीप शहीदों के नाम कार्यक्रम का आयोजन हुआ कार्यक्रम में बोलते हुए युवा वाहिनी प्रमुख संजीव नायक एडवोकेट ने कहा कि कारगिल विजय दिवस को 22 वर्ष का समय हो चुका है आज के ही दिन भारतीय सेना ने ऑपरेशन विजय के माध्यम से कारगिल में विजय हासिल की थी आज हम सभी



लोगों को पुनः देश के अंदर अपने आसपास फैली बुराइयों से उसी युद्ध की भांति लड़ाई लड़के संघर्ष करके जीत हासिल करनी है आज के समय हमारी लड़ाई जातिगत वैमनस्यता ह्याअहूत अंधविश्वास नशा अशिक्षा से है आज के समय नशा रूपा दानव हमारे सामने मुह फैलाए हुए खड़ा है उससे लड़ाई लड़ने के लिए सामाजिक जन जागरूकता की आवश्यकता है संजीव नायक एडवोकेट ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि आज हम सभी लोगों को कारगिल विजय दिवस के मौके पर संकल्प लेने

की जरूरत है कि आज से हम सभी लोग आपसी भेदभाव प्रेम भाईचारा बनाकर सामाजिक समरसता का परिचय देते कार्यक्रम में पूर्व प्राचार्य उमाशंकर खरे एवं पूर्व नगर नगर परिषद अध्यक्ष बीएल बंडा, विकास त्यागी समाजसेवी ने भी अपने विचार रखे कार्यक्रम का संचालन जीतू कुशवाहा ने किया तथा कई युवाओं ने अपनी बात को रखा कार्यक्रम में अतुल श्रीवास्तव देवेन्द्र कुशवाहा एडवोकेट विवेक नायक एडवोकेट सहित कई युवा मौजूद थे।

टोल के पैसे मांगे तो कर दिए हवाई फायर

भिण्ड। टोल प्लाजा पर टोल टैक्स मांगने पर कर्मचारी के साथ विवाद हो गया। जिसमें वाहन मालिक ने टोल प्लाजा पर दबंगई दिखाते हुए हवाई फायर किए।



भिंड-ग्वालियर नेशनल हाईवे 719 पर स्थित बोट्टा टोल प्लाजा पर मंगलवार की सुबह 9 बजे के लगभग चार पहिया वाहन पर सवार बदमाशों ने फायरिंग कर दी। फायरिंग में टोल कर्मचारी बाल बाल बचे। मौके पर पहुंची महाराजपुरा थाना पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। जानकारी के मुताबिक बोट्टा टोल प्लाजा पर चार पहिया वाहन सवार चार युवक टोल प्लाजा को क्रॉस कर रहे थे, टोल कर्मचारियों ने जब पैसे मांगे तो विवाद होने लगा। विवाद होने पर युवकों ने वाहन से बंदूकें निकाल कर के टोल कर्मचारियों पर फायरिंग कर दी। फायरिंग में चली एक गोली टोल के पीछे बने एक मकान में जाकर लगी। जो मकान की दीवार को तोड़कर आर पार हो गई। घटना सीसीटीवी में कैद हो गई। भिंड के रहने वाले नीरु नामक युवक और उसके साथियों पर फायरिंग करने का आरोप है।

कलेक्टर ने सीएम हेल्पलाइन में कम संतुष्टिपूर्ण कार्यवाही रहने पर अधिकारियों पर जाहिर की नाराजगी

सीएम हेल्पलाइन अंतर्गत अधिक लंबित शिकायतों वाले विभागों की कलेक्टर ने की समीक्षा

भिण्ड। कलेक्टर डॉ सतीश कुमार एस के द्वारा सीएम हेल्पलाइन अंतर्गत जिन विभागों में ज्यादा लंबित शिकायतें हैं उनकी विभिन्न बिंदु जैसे अनअटेंड शिकायतें, संतुष्टिपूर्वक बंद की गयी शिकायतें, 100 दिवस से अधिक की शिकायतों पर नियमित वचुंअल समीक्षा करना प्रारंभ किया गया है। जिसके अंतर्गत उनके द्वारा आज से ऊर्जा विभाग, राजस्व विभाग, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग, लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, संस्थान वित्त विभाग एलडीएम, महिला एवं बाल विकास, सामाजिक न्याय, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, शिक्षा विभाग, नगरीय विकास एवं आवास विभाग, खाद आपूर्ति विभाग अंतर्गत लंबित शिकायतों की नियमित समीक्षा प्रारंभ की गई। सभी विभागों के एल-1 एवं एल-2 अधिकारी इस दौरान



वचुंअल उपस्थित रहें। कलेक्टर डॉ सतीश कुमार एस के द्वारा प्रत्येक विभाग अंतर्गत लंबित शिकायतों की समीक्षा कर उनके निराकरण के संबंध में निर्देश दिए साथ उन्होंने शिकायतों में संतुष्टिपूर्वक कार्यवाही कम रहने पर विभिन्न विभागों के अधिकारियों पर जाहिर की नाराजगी। इन अधिकारियों द्वारा सीएम हेल्पलाइन में शिकायतों पर कम संतुष्टि से कार्यवाही की गई है। उनमें उर्जा विभाग के हेमंत कुमार, एमसी गुप्ता, सुनील त्रिपाठी, बी सकार, गोपेश कुमार उपाध्यक्ष, नगर निकाय के बाबूलाल कुशवाहा, योगेंद्र सिंह तोमर, सतीश दुबे, सुरेंद्र शर्मा, हनुमंत सिंह भदौरिया, राजस्व विभाग के शिवदत्त कटार,

रामजीलाल वर्मा, मनोज कुमार, आरएन खरे, अरविन्द शर्मा, पंचायत एवं ग्रामीण विकास के आलोक प्रताप सिंह इटोरिया, उदयसिंह सिकरवार, ओमप्रकाश सिंह कौरव, श्याम मोहन सिंह श्रीवास्तव, अतुल प्रकाश सक्सेना, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी के गजेन्द्र सिंह भदौरिया, सतेन्द्र सिंह भदौरिया, डीआर जर्मन, केसी झा, पीआर गोयल, खाद आपूर्ति के अवधेश पाण्डेय, सुनील मुद्गल, अजय अग्रना, लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के डॉ शैलेन्द्र पाण्डेय, डॉ शोभायाम शर्मा, डॉ जेएस राजपूत, डॉ डीके शर्मा, डॉ अजीत मिश्रा, सामाजिक न्याय एवं निःशुल्क कल्याण विभाग के श्याम मोहन श्रीवास्तव, आलोक प्रताप सिंह इटोरिया, अतुल प्रकाश सक्सेना, द्वारिका प्रसाद शर्मा, लोक शिक्षण विभाग के अरविन्द सिंह भदौरिया, प्रद्युम्न सिंह तोमर, पीपी पंचौरी, एनएस भदौरिया, पूर्णसिंह चौहान, महिला एवं बाल विकास के श्रीमती बीना मिश्रा, अजयदेव, अजयदेव जाटव, परशुराम शर्मा, डॉ संदीप सिंह मौर्य शामिल हैं।

समय सीमा पत्रों की साप्ताहिक समीक्षा बैठक सम्पन्न

भिण्ड। कलेक्टर डॉ सतीश कुमार एस की अध्यक्षता में समय सीमा पत्रों की साप्ताहिक समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में आगामी समय में आयोजित होने वाली मुख्यमंत्री वीसी के विषयों पर समीक्षा कर सभी संबंधित विभागों को वीसी की तैयारी करने के निर्देश दिए गए। बैठक में कलेक्टर द्वारा जिले में वृक्षारोपण के संबंध में भी विभागावार दिए लक्ष्यों की समीक्षा कर सभी संबंधित विभागों को वृक्षारोपण कार्य को करने के साथ अंकुर एप पर भी अपलोड करने के निर्देश दिए। बैठक में अपर कलेक्टर प्रवीण फुलपगारे, सीईओ जिला पंचायत जेके जैन, संयुक्त कलेक्टर वरुण अवस्थी, एसडीएम भिण्ड-अटेर उदयसिंह सिकरवार सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे। कलेक्टर ने एक जिला एक उत्पाद की समीक्षा करते हुए कहा कि यह प्रदेश शासन की महत्वपूर्ण योजना है संबंधित विभाग योजना का क्रियान्वयन ठीक प्रकार से कर योजना में आवेदक को लाभ दिलवायें। कलेक्टर डॉ सतीश कुमार एस ने जिला शिक्षा अधिकारी से शासकीय विद्यालयों में रैन वॉटर हार्वैस्टिंग सिस्टम की स्थिति के बारे में पूछा गया। इस पर उनके द्वारा बताया गया कि अभी तक जिले के 70 विद्यालयों में रैन वॉटर हार्वैस्टिंग प्रणाली प्रारंभ हो गई है। कलेक्टर ने जिले में रोजगार मेला आयोजन करने के निर्देश संबंधित अधिकारी को दिए जिस पर उनके द्वारा बताया गया कि रोजगार मेले का आयोजन शीघ्र ही किया जायेगा।



टैलेन्ट सर्च 2020-21 के संबंध में बैठक सम्पन्न

भिण्ड। कलेक्टर डॉ सतीश कुमार एस की अध्यक्षता जिला खेल एवं युवक कल्याण विभाग की टैलेन्ट सर्च 2020-21 के संबंध में बैठक कलेक्टर सभागार में आयोजित की गई। बैठक में संयुक्त कलेक्टर एवं जिला संयोजक आदिम जाति कल्याण वरुण अवस्थी, जिला शिक्षा अधिकारी हरिभवन सिंह तोमर, जिला खेल एवं युवक कल्याण अधिकारी जीवन सिंह जादौन एवं उत्कृष्ट खिलाड़ी के रूप में प्रमोद कुमार त्रिवेदी, प्रमोद कुमार गुप्ता आदि उपस्थित थे।

कलेक्टर डॉ सतीश कुमार एस ने कहा कि टैलेन्ट सर्च 2020-21 हेतु ब्लॉक स्तर के 12 से 18 वर्ष की आयु वर्ग के खिलाड़ियों को पंजीकृत कर उनका जिला मुख्यालय स्तर पर 3 अगस्त से 10 अगस्त 2021 तक फिजीकल फिटनिंग टेस्ट राजीव गांधी खेल परिसर मैदान स्टेडियम भिण्ड में किया जाए। किन्तु अधिक वर्षा होने की स्थिति में 17 वीं बटालियन मैदान पर किया जाए। उन्होंने कहा कि चिन्हित खिलाड़ियों का संभाग स्तर पर 11 अगस्त से 20 अगस्त 2021 तक स्कल टेस्ट लिया जाए। संभाग स्तर पर चयनित खिलाड़ियों का 7 से 10 दिवस का शिविर लगाकर अकादमी के मुख्य प्रशिक्षकों द्वारा अंतिम चयन किया जाएगा। कलेक्टर ने जिला शिक्षा अधिकारी से कहा कि वे जिले के समस्त प्राचार्यों की वचुंअल मीटिंग लेकर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को अवगत कराना सुनिश्चित करें।

जमीनी विवाद को लेकर दो पक्षों में खूनी संघर्ष

पुशतैनी जमीन पर जबरन अवैध कब्जा करने की फिराक में आपराधिक

पीड़ित के सिर पर कुल्हाड़ी से किया हमला, घायल ग्वालियर जेएच हॉस्पिटल में भर्ती है साथ ही अन्य भाई दिनेश और सतीश को भी आई चोटें

भिण्ड। जमीन पर कब्जे को लेकर दो पक्षों में चले आ रहे विवाद के चलते शनिवार के रोज यहां दो पक्षों में विवाद हो गया, जिसमें दोनों पक्षों द्वारा एक दूसरे पर जानलेवा हमला करते हुए गोलीबारी कर दी। इस मामले में गंभीर घायल पक्ष ने मालनपुर पुलिस पर पक्षपात करते हुए दूसरे पक्ष को बचाते हुए प्रकरण दर्ज करने का आरोप लगाया है। लहचूरा निवासी सतीश शर्मा ने बताया कि उनकी लहचूरा और हरिराम पुरा के बीच पुशतैनी खेती है, जिस पर हरिराम पुरा निवासी आरोपी प्रवृत्ति के हेमसिंह उर्फ हेमू जाटव नामक युवक द्वारा अवैध रूप से कब्जा किया गया है। बीते शनिवार को जब सतीश अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ जमीन जोतने के लिए वहां गया तो यहां पहले से ही हमला करने की नियत से बैठे आरोपी हेमू जाटव, पुष्पेन्द्र जाटव सहित अन्य लोगों ने गाली गलौच करते हुए मारपीट करना शुरू कर दिया। इस दौरान आरोपियों ने सतीश के भाई दौलतराम शर्मा के सिर पर कुल्हाड़ी से वार करते हुए दिनेश शर्मा व



पोस्ट की जा रही है। जबकि दूसरे पक्ष के दौलतराम शर्मा सहित सतीश शर्मा व दिनेश शर्मा का गंभीर घायल होने पर ग्वालियर में इलाज किया जा रहा है। ऐसे में आसपास के क्षेत्र में इस मामले को लेकर जातीय संघर्ष बढ़ने की स्थिति बन रही है, जिसे रोकने में स्थानीय पुलिस पूरी तरह से नाकाम साबित हो रही है।

पुलिस ने बरामद किए थे हथियार

सूत्रों के अनुसार मारपीट के इस मामले के तूल पकड़ने और भीम आर्मी के विवाद में शामिल होने के बाद यह प्रकरण विवादित हो गया। जिसकी जानकारी होने पर मालनपुर पुलिस ने संघर्ष बढ़ाने का प्रयास कर रहे भीम आर्मी के कुछ लोगों के पास से हथियार भी बरामद किए थे। लेकिन बाद में पुलिस ने मामले को रफा-दफा करते हुए बरामद हथियार और युवकों को छोड़ दिया। जिसके चलते शर्मा परिवार इन दिनों दहशत में बना हुआ है। ऐसे में उनके द्वारा वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों से मामले में न्याय की गुहार लगाई जा रही है।

इनका कहना है

लहचूरा और हरिराम पुरा के बीच जाटव व शर्मा परिवार के बीच जमीनी विवाद में मारपीट हुई है। जिसमें दोनों पक्षों की शिकायत पर प्रकरण कायम कर लिया गया है। हथियारों के साथ युवकों के फकड़े जाने जैसी कोई बात नहीं हुई है। फिलहाल मामले में जांच की जा रही है।

विनोद सिंह कुशवाहा, टीआई मालनपुर

फोटो नम्बर-10,11

मानसून की तबाही

जून और जुलाई माह के पहले पखवाड़े में मानसून ने जिस तरह की आंखमिचौली की, उससे लगने लगा था कि एक बार फिर सारे अनुमान फेल होने का हैं। गर्मी की तपिश और शरीर से बह रहे पसीने को देखकर फेल आभास ही नहीं हो रहा था कि देश में मानसून दस्तक दे चुका है। मगर अब पिछले सात दिनों में देश के अलग-अलग हिस्सों में मानसून का जो रुतबा दिखा है, उसने आम जन से लेकर सरकारों को हलाकान कर दिया है। भारी जन हानि के साथ संपत्ति को नुकसान पहुंचा है। महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश के साथ बिहार व अन्य राज्यों में बारिश से तबाही का सिलसिला शुरू हो गया है। अकेले महाराष्ट्र में ही 150 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। नदियां खतरनाक स्थिति में पहुंच रही हैं। मग्न में ही कई गांवों का संपर्क कट चुका है। नदी के किनारे बने मंदिर पानी में डूब चुके हैं। महाराष्ट्र के बाद हिमाचल प्रदेश के किन्नौर में भू-स्खलन ने बर्बादी के निशान छोड़े हैं। बरसात के दिनों में बाढ़, भूस्खलन और मकानों के ढहने से सैकड़ों लोगों का जान गंवा बैटना जैसे हर साल की स्थायी स्थिति बन चुकी है। इस साल भी अब तक महाराष्ट्र, गोवा, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश आदि में बरसात से काफी तबाही मच चुकी है। आने वाले दिनों में और भारी बरसात की चेतावनी जारी की जा चुकी है। बरसात के समय मचने वाली इस तबाही की वजहें छिपी नहीं हैं। ऐसा भी नहीं कि पिछले कुछ सालों में पहले की अपेक्षा अधिक बारिश हो रही है। यह जरूर है कि बरसात की प्रकृति में कुछ बदलाव आया है। मगर इससे ज्यादातर पेशानियां अनियोजित शहरी विकास, जल निकासी के रास्तों में अवरोध, नदियों के पाटों पर अतिक्रमण, बांधों की क्षमता का समुचित आकलन न होने आदि की वजह से पैदा होती हैं। नदियों के पाट सिक्ड़ते और पेटा उथला होता गया है। इसलिए बरसात का पानी संचाल पाने की उनकी क्षमता काफी घट गई है। उनका पानी उफन कर रिहाइशी इलाकों को जलमग्न कर देता है। यही हाल गाद भरते जाने से बांधों का भी हो गया है। जब वे बरसात का पानी संचाल नहीं पाते तो बिना चेतावनी के उनके फाटक खोल दिए जाते हैं और पानी की वेग में बहुत सारे लोग मारे जाते हैं। मुंबई और महाराष्ट्र के दूसरे शहरों में बरसात की वजह से पैदा होने वाली दुशारियां वहां के नगर निकायों और प्रशासन की लापरवाही का नतीजा अधिक होती हैं। मुंबई के अनेक इलाकों में बहुत सारे जर्जर हो चुके मकान खड़े हैं, जिनमें दर्जनों परिवार रहते हैं। अधिक बरसात होने से अक्सर ऐसे मकान धसक कर बैठ जाते हैं और कई लोग मारे जाते हैं। इसी तरह पहाड़ी टीलों, नालों के किनारे बहुत सारी बस्तियां बसी हुई हैं, जिनके मकानों की न तो नींव सही से ढली है और न उनके ऊपर खड़ी मंजिलों के वजन का आकलन किया गया है। तेज बरसात से जब उन टीलों की जमीन धंसती है तो वे मकान भी जमींदोज हो जाते हैं। छिपी बात नहीं है कि ये सारी बस्तियां प्रशासन की जानकारी में बसती और अनियोजित तरीके से फैलती जाती हैं। आखिर पुराने पड़ चुके मकानों को खाली कराने और खतरे वाली जगहों पर रह रहे लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने की जिम्मेदारी नगर निगमों की है, पर वे इससे आंखें चुराते देखे जाते हैं। इसी तरह पहाड़ी इलाकों में अवैध खनन, अवैध निर्माण और सड़कों आदि के लिए होने वाली खुदाई के चलते पहाड़ दरक चुके हैं। नतीजतन, भारी बारिश से उनके भूखंड धिसकने शुरू हो जाते हैं। उनकी जद में आने वाले मकान ध्वस्त हो जाते हैं। बरसात के वक मचने वाली तबाही को केवल कुदरत का कहर बता कर प्रशासन अपनी जिम्मेदारियों से मुहं नहीं मोड़ सकता। हर साल बाढ़ में फंसे लोगों को सुरक्षित जगहों पर पहुंचाने के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन के कर्मचारियों को हलकान होना पड़ता है। अगर शहरों की बसाहट को सुनियोजित किया जाए, जल निकासी की समुचित व्यवस्था हो तो जलभराव की स्थितियों से काफी हद तक पर पाया जा सकता है।

आस-पड़ोस नेपाल में लगेगी मोबाइल के ग्रे बाजार पर लगाम!

योगेश कुमार गोयल
नेपाल दूरसंचार प्राधिकरण (एनटीए) द्वारा अवैध मोबाइल फोन सेट के जरिये मोबाइल सेवाओं के संचालन को रोकने के लिए मोबाइल डिवाइस प्रबंधन प्रणाली (एमडीएमएस) को लागू कर दिया गया है। इसके लागू होने के बाद अब 16 जुलाई से आईएमईआई नंबर पंजीकरण के बिना नेपाल में प्रवेश करने वाले मोबाइल फोन पर प्रतिबंध लग गया है। एनटीए के अनुसार यह प्रणाली अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ द्वारा निर्धारित मोबाइल मानकों के अनुसार मोबाइल उपकरणों को आयात करने में मदद करती है और इससे मोबाइल फोन के इस्तेमाल से होने वाली आपराधिक गतिविधियों पर भी लगाम लगेगी। बताया जा रहा है कि लंबी तैयारी के बाद नेपाल में यह व्यवस्था लागू की गई है। एमडीएमएस लागू होने के बाद अवैध रूप से ग्रे मार्केट में खरीदा गया मोबाइल फोन और विदेश से रिशतेदारों द्वारा खरीदा गया कोई भी मोबाइल सैट अब तब तक काम नहीं करेगा, जब तक कि उसका आईएमईआई नंबर पंजीकृत नहीं हो जाता। हालांकि एनटीए का कहना है कि एमडीएमएस के कार्यान्वयन से वर्तमान में सक्रिय मोबाइल फोन के संचालन पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा और व्यक्तिगत स्तर पर खरीदे गए मोबाइल फोन सैटों का पंजीकरण एनटीए की वेबसाइट के माध्यम से किया जा सकता है। एनटीए द्वारा आम जनता से नेपाल में वर्तमान में उपयोग में आने वाले मोबाइल फोन को पंजीकृत करने का आग्रह किया गया है। अवैध फोन कॉल के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए लागू की गई एमडीएमएस प्रणाली उन मोबाइल फोन सैटों से दूरसंचार सेवा के उपयोग पर रोक लगाती है, जो नकल और चोरी के सैट के माध्यम से टैक्स चोरी करते हैं। एमडीएमएस के सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर के संचालन के लिए चाबहिल में एक अलग भवन भी बनाया गया है।

एनटीए द्वारा जारी बयान के मुताबिक आपराधिक गतिविधियों को नियंत्रित करने और राज्य में राजस्व बढ़ाने के लिए इस तरह के नियमों को सख्ती से लागू किया गया है। वर्तमान में चल रहे मोबाइलों पर यह नियम सख्ती से लागू होगा। इस नियम के लागू होने के बाद मोबाइल फोन के रजिस्ट्रेशन से राज्य को मिलने वाले राजस्व में वृद्धि होगी और मोबाइल फोन भी सुरक्षित रहेंगे। नई प्रणाली के लागू होने के बाद मूल रूप से ग्रे मार्केट से मोबाइल आयात और बिना बिल तथा वारंटी के बेचे जाने वाले फोन का कारोबार खत्म हो जाएगा। नए नियम के तहत नेपाल में फोन सेट पर मोबाइल सिम कार्ड तब तक काम करेगा, जब तक सैट का इंटरनेशनल मोबाइल इड्रिफ़िमेंट आईडेंटिटी (आईएमईआई) नंबर रजिस्टर नहीं किया जाता। हालांकि मोबाइल फोन सेवा बाधित न हो, इसके लिए एनटीए द्वारा ऐसे लोगों के लिए पंजीकरण कराने के लिए अभी लंबा समय निर्धारित किया है, जिनके पास पहले से ही ऐसे मोबाइल हैं। एक बार जब फोन मोबाइल नेटवर्क से कनेक्ट हो जाता है तो सिस्टम की मदद से उसके आईएमईआई नंबर का पता लगाया जाता है। यदि मोबाइल औपचारिक चैनलों के माध्यम से नहीं आया है तो उसे ब्लॉक कर दिया जाएगा, इसलिए नेपाल में अब मोबाइल फोन का इस्तेमाल करने के लिए उसका रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है।



अब भी जान लें कि एमडीएमएस आखिर है क्या? यह एक ऐसा सुरक्षा सॉफ्टवेयर है, जो दूरसंचार नियामक को उन नीतियों को लागू करने में सक्षम बनाता है, जो अंतिम उपयोगकर्ता मोबाइल उपकरणों को सुरक्षित, मॉनिटर तथा प्रबंधित करती हैं। नेपाल सरकार की यह अग्रह किया गया है। अवैध फोन कॉल के अनेक अंतर्राष्ट्रीय मोबाइल उपकरण पहचान' (आईएमईआई) नंबर के साथ पंजीकृत होने के बाद रिकॉर्ड रखती है। दरअसल प्रत्येक मोबाइल फोन का 15 अंकों का एक विशिष्ट आईएमईआई नंबर होता है और डुअल सिम फोन सैट के लिए दो आईएमईआई नंबर होते हैं। एमडीएमएस की महत्ता के बारे में एनटीए के उपनिदेशक अच्युतानंद मिश्र का कहना है कि लंबे समय तक रिचार्ज करने पर मोबाइल सैट फटने और कपड़े की जेब में रखे मोबाइल सैट में विस्फोट होने की कई दुर्घटनाएं हुई हैं, जो खासकर तभी होता है

वैट वसूलती है। ग्रे बाजार ऐसा बाजार है, जहां से हजारों मोबाइल सैट बिना बिल और बिना वारंटी के आयात किए जाते हैं। लोग बड़ी आसानी से बैंग, कार्गो या अपने कपड़ों की जेब में ही ऐसे मोबाइल खरीदकर लाते रहे हैं। व्यापारी संगठनों के अनुसार नेपाल ने वित्त वर्ष 2019-20 में 4.3 मिलियन यूनिट मोबाइल फोन का आयात किया, जिनमें से करीब 40 फीसदी ग्रे चैनल के माध्यम से आए। नेपाल में बाहर से आने वाले मोबाइल फोन का बहुत बड़ा बाजार है। सीमा शुल्क विभाग के अनुसार देश ने चालू वित्त वर्ष के शुरूआती 11 महीनों में 34.14 अरब रुपये के मोबाइल फोन का आयात किया जबकि उससे पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि के दौरान आयात केवल 15.74 अरब रुपये था। नेपाल के सीमा शुल्क विभाग के अनुसार लोगों को अब अपने साथ दो मोबाइल डिवाइस लाने की अनुमति होगी, एक उपयोग में और दूसरा अतिरिक्त या नए फोन सेट के रूप में। यदि कोई इससे ज्यादा मोबाइल सैट लाता है तो उसे खरीद बिल जमा करके सीमा शुल्क का भुगतान करना होगा। नेपाली मोबाइल डीलरों का मानना है कि एमडीएमएस प्रणाली लागू होने के बाद नेपाल में मोबाइल फोन महंगे हो सकते हैं और खासकर जो ग्रे मार्केट से आयात होते रहे हैं।

भारत से भी बड़ी संख्या में मोबाइल फोन नेपाल जाते हैं लेकिन नया नियम लागू होने के बाद इस कारोबार पर बड़ा असर पड़ना तय है। भारत-नेपाल के बीच

सुख की उपेक्षा क्यों?
मेरे पास लोग आते हैं। जब वे अपने दुख की कथा रोने लगते हैं, तो बड़े प्रसन्न मालूम होते हैं। उनकी आंखों में चमक मालूम होती है। जैसे कोई बड़ा गीत गा रहे हों! अपने घाव खोलते हैं, लेकिन लगता है जैसे कमल के फूल ले आए हैं। सुख की तो कोई बात ही नहीं करता। और ऐसा नहीं है कि सुख नहीं है; हम सुख पर पर ध्यान नहीं देते हैं। हम दुःख-दुःख चुन लेते हैं; हम सुख की उपेक्षा कर देते हैं। फिर जिसकी उपेक्षा कर देते हैं, स्वभावतः धीरे-धीरे वह दूर चला जाता है और जिसमें हम रस लेते हैं वह पास होता चला जाता है। संतों की बात तुम्हें तभी जमेगी, रुचेगी, भली लगेगी, प्रीतिकर मालूम होगी-जब तुम दुःख को पकड़ना छोड़ दोगे; जब तुम जागोगे और सुख की सचेष्ट खोज शुरू करोगे। तुम्हारे भीतर अगर अभी भी दुःख को पकड़ने का आयोजन चल रहा है, तो संतों के वचन तुम्हारे कानों में गुंजेगे और खो जाएंगे। तुम्हारे हृदय तक नहीं पहुंचेंगे। क्योंकि संतों के वचनों में बड़ा सुख भरा है। तुम सुखोन्मुख हो जाओ, तुम आनंद की खोज में लग जाओ; तो ये एक-एक शब्द ऐसे जाएंगे तुम्हारे भीतर जैसे तीर चले जाएं। और ये एक-एक शब्द तुम्हारे भीतर ऐसे-ऐसे हजार-हजार फूल खिला देंगे, जैसे कभी न खिले थे। तुम्हारे भीतर बड़ी रोशनी होगी। ये छोटे-छोटे शब्द हैं। मगर ये बड़े सार्थक शब्द हैं। सुनो- 'बोलू हरिनाम तू छोड़ि दे काम सब, सहज में मुक्ति होई जाय तेरी। काम यानी कामना। काम यानी वासना। काम यानी इच्छा, तृष्णा। यह मिले वह मिले-कुछ मिले!

अरविन्द प्रेमचंद जैन
बिना कारण के कोई कार्य उत्पन्न नहीं होता। कोई भी कार्य निर्थक नहीं होता। बहुत पहले समाज विखरित था. उस समय आवागमन के साधन शून्य .कच्चे मार्ग ,बैलगाड़ी ,घोड़ों की सवारी ही मुख्य साधन होते थे . अधिकतर निवास गांव में होते थे. व्यापार शून्य ,खेती किसानों से निवृत्त और आवागमन का साधन न होने से जीवन अवरूढ़ सा हो जाता. उस समय समय की उपयोगिता हेतु अधिकतर धार्मिक आयोजन किये जाते थे.जिससे समय के साथ जीवन की यथार्थता का दर्शन होते थे.इमें ब्या करना चाहिए और हम क्या कर रहे हैं .इससे जीवन की दशा और दिशा समझ में आती थी और हैं भी. कच्ची सड़के,हरियाली अधिक ,वर्षा की आधिक्यता से आवागमन सीमित होने से धार्मिक सामाजिक आयोजन

किये जाते. जीव हिंसा का डर ,हरी साग सब्जी में रोगों का संक्रमण होने से उसका भी त्याग और उस समय इतनी प्रकार की सब्जियां भी नहीं मिलती थी तो सादा भोजन ,जीवन और उच्च विचार का परिपालन करते थे . यह चातुर्मास सब समाज में और दर्शन में मनाते हैं और इसका आयोजन कुछ सार्थक उद्देश्य के होते थे और हैं . इसमें मुख्यतः जीव हिंसा का चचाव और धार्मिक भावना का उदघाटन करना, इसके लिए कही भागतव गीता ,रामायण आदि का परायण होता हैं .आत्म कल्याण की भावना बलबती होती हैं. जैन समाज में आज से पचास साठ पहले जैन आचार्यों ,मुनियों की इतनी अधिक संख्या नहीं

रहती थी और न सब जगह मुनि वर्ग पहुंच पाते थे तथा उस समय आर्थिक संघर्ष भी आज की अपेक्षा अधिक था. उस समय आवागमन के साधन तैयार होने लगे थे. और समाज गांव से शहरों की ओर आने लगी चाहे व्यापार के लिए ,नौकरी के लिए या शिक्षा के लिए. या विकास के लिए. पचास साठ साल पहले कुछ पंडित जी ,कुछ विद्वान ही पर्युण्य पर्व में बुलाये जाते थे उसी समय धरम का रसास्वादन मिल जाता था. आचार्य श्री के प्रादुर्भाव से और उस समय अन्य आचार्यों के कारण अनेकानेक मुनि आचार्य , आर्थिकायें



,ब्रह्मचारी आदि के माध्यम से ज्ञान की अमृत वर्षा होती हैं और प्रभावना का बोध होता हैं . आजकल उच्च श्रेणी के श्रावक /श्राविका होते जा रहे हैं और वर्तमान में आचार्यों के कारण उनके शिष्य भी बेजोड़ ज्ञानी,ध्यानी ज्ञाता हो गए है .उन्होंने लगातार अध्ययन कर अपने आप में श्रेष्ठता हासिल की हैं .उनकी प्रभावना हमारे ऊपर

अधिक क्यों पड़ती हैं ?उसका कारण उनकी त्याग ,तपस्या .साधना ,विवेक, ज्ञान और उनके द्वारा कुछ समाज ,देश के कल्याण के हित की बात करते हैं .और वे मात्र स्व पर कल्याण में रत होते हुए समाज को बहुत देते हैं .संसार की अनित्य दुःसा से छूटकर आत्मिक कल्याण में लगे . आचार्य /मुनि /श्राविका समाज से आहार लेते हैं ,जिसके कारण आहार दाता अपने को बड़ा भाग्यशाली मानता हैं,बड़े पुण्य से मुनि महाराज आदि आहार लेते हैं जिसके उत्साह का ठिकाना दाता को होता हैं और उसके बदले आचार्य /मुनि /आर्थिकाये स्वकल्याण /आत्मसाधना करती/करते हैं और समाज को ज्ञान दान ,चरित्र निर्माण में सहयोग देती हैं

,प्रेरण देती हैं ,प्रेरक बनते हैं .आज कल साधन ,सुविधाएं ,व्यापार, नौकरी के कारण सम्वन्ता आने से समय की कमी होती जा रही हैं ,हम कमवक्त (कम वक्त) होते जा रहे हैं .आज वर्तमान में आर्थिक ,भौतिक चकाचौध के कारण और बहुत सुशिक्षित होने के कारण विदेशों में जाना आजकल सामान्य होता जा रहा हैं और महानगरों में भी /व्यापार /नौकरी के कारण जाने से आहार/भोजन की परम्परा जो रात्रिकालीन त्याग की थी वह पूर्णतयः समाप्त हो गयी ,और अब अंतरजातीय विवाह या प्रेम विवाह होने के कारन वे लोग समाज से जुड़ना नहीं चाहते .और धनवान लोग अपने अपने द्वीप में रहकर पूर्ण स्वच्छंदता से रहकर पर उपदेश देते हैं .नगर निगम अशुद्ध पानी प्रदाय करती हैं पर हम अपना लोटे का पानी छान कर ,साफ रखते हैं वैसे धरम व्यक्ति प्रधान होता हैं।

कोरोना से बचाव हेतु जागरूकता जरूरी

डॉ. भरत मिश्र प्राची
देश में जब - जब चुनाव होते है, हर बार चुनाव आयोग की ओर से चुनाव आचार संहिता लागू की जाती है जिससे चुनाव में अनियमिततायें न हो एवं चुनाव सही ढंग से सम्पन्न हो जाय। कोरोना काल के दौरान हो रहे चुनाव आचार संहिता में कोरोना न फैले इस ओर भी चुनाव आयोग का ध्यान होना चाहिए पर ऐसा नहीं हुआ। जिसका परिणाम यह हुआ कि कोरोना देश में फिर से घुस ही नहीं गया गांवों तक फैल गया। यदि इस दिशा में चुनाव आयोग जागरूक होता तो आचार संहिता में कोरोना के फैलने के मुख्य कारक रैली, चुनाव सभा में अनियंत्रित भीड़ पर प्रतिबंध लगाया होता। जब तक इस दिशा में ध्यान गया तब तक कोरोना बहुत दूर तक अपना पग पसार चुका था। देश में फिर चुनाव काल आने वाला है। अभी कोरोना के पांव थमे हुये है। फिर से कोरोना के पग पसरे नहीं , चुनाव काल में चुनाव आयोग की जागरूकता बहुत जरूरी है। इस दिशा में चुनाव आयोग के साथ - साथ सरकार एवं राजनीतिक दलों की भी जागरूकता बहुत जरूरी है। इस तरह के अनेक पैमाने है जिसके सहारे कोरोना फिर से अपना पग पसार सकता है। ऐसे सामूहिक सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक कार्यक्रम जहां अनियंत्रित भीड़ होने की संभावना बनी रहती है, सभी की जागरूकता जरूरी है। ऐसे समय में जहां कोरोना का प्रभाव अभी भी कायम है, इस प्रकार



तरह के आयोजनों में सोशल डिस्टेंसी बनाये रखते हुये सीमित संख्या में आयोजन करने का दायित्व निभाना देश के सभी नागरिक का कर्तव्य है। कोरोना से बचाव हेतु हर दिशा में जागरूकता बहुत जरूरी है। कोरोना से बचाव हेतु जब तक कोरोना प्रभाव बहा है, खान - पान, भ्रमण, कार्य शैली, दैनिक दिनचर्या में जागरूकता बहुत जरूरी है। इस दौरान कोरोना गाईड की पालना करना बहुत जरूरी है। कोरोना से बचाव हेतु आये वैक्सीन को समय से लगाकर संयम एवं सावधान रहते हुये अपनी दिनचर्या को करना इस दिशा में सही जागरूकता है। वैक्सीन लगा लेने के बाद यह समझ लेना कि हम पूर्ण रूप से सुरक्षित हो चुके है, यह सबसे बड़ी भूल होगी। इस प्रकार

की सोच में लापरवाही प्रवेश कर फिर से कोरोना का शिकार बना सकती है। फिर इस बात को ज्यादा बल मिलने लगता कि वैक्सीन बेअसरदार है। इसकी आड़ में की गई लापरवाही की चर्चा नहीं होती। वैक्सीन पूर्णरूप से कारगर है, कोरोना से बचाव का फिलहाल एकमात्र यही कवच है पर जब तक कोरोना जड़ से खत्म नहीं हो जाता तब तक इस कवच को पहन लेने के बाद भी फिलहाल जागरूकता जरूरी है। कोरोनाकाल में आना - जाना, पूजा - पाठ, मिलना - जुलना, सबकुछ बंद रहा। वैक्सीन आने के बाद इस तरह की बंद पड़ी गतिविधियां शुरू हुई है। इस हालात में जागरूकता जरूरी है। इस दिशा में आई जागरूकता लापरवाही करने से रोक सकती है। जिनको कोरोना के तीसरे चरण की सुबुगुहाइट होने लगी है तो इससे बचने के लिये सभी को जागरूक होना जरूरी है। वरना कोरोना के पहले , दूसरे चरण से भी भयावह स्थिति हो सकती है। अभी देश के बच्चों को वैक्सीन नहीं लगी है। हमारी जरा सी असावधानी एवं लापरवाही इन बच्चों के भविश्य को संकट में डाल सकती है। ये बच्चे हमारे भविश्य है। जिसकी सुरक्षा का दायित्व हर एक के कंधे पर है। इन्हें बचाने के लिये कोरोना के मामले में सभी की जागरूकता जरूरी है। देश में चुनाव ,बच्चों की परीक्षा समय पर हो, पर्व त्योहार भी मनें, एक दुसरे से मिलना - जुलना भी हो सके, पर कोरोना के पग फिर से न पसरे, इस ओर जागरूकता जरूरी है।

डायबिटीज के रोगी, हो सकते हैं कोरोना के संकेत सावधानियां

अरविन्द प्रेमचंद जैन
कोरोना महामारी की दूसरी लहर के प्रकोप में वैसे तो हर उम्र के लोग वायरस की चपेट में आ रहे हैं लेकिन सबसे ज्यादा खतरा उन पर जो पहले से ही सेहत की समस्याएं झेल रहे हैं। खासकर डायबिटीज के मरीजों को इस वक्त ज्यादा सावधान रहने की जरूरत है। उन्हें इन लक्षणों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।
कोरोना वायरस की दूसरी लहर और पिछले साल की महामारी में काफी अंतर सामने आया है। म्यूटेशन के बाद कोविड के नए-नए वेरिएंट सामने आ रहे हैं जो पहले के वायरस की अपेक्षा ज्यादा संक्रामक हैं। कोविड मामलों को कंट्रोल करने में सरकार ज्यादा से ज्यादा लोगों को वैक्सिनेट करने का प्रयास कर रही है बावजूद इसके बड़ी तादाद में लोग इससे संक्रमित हो रहे हैं। नए वेरिएंट लक्षणों में भी बदलाव आया है जो मरीजों की जान जोखिम में डाल रहे हैं। इनमें मधुमेह के रोगियों को कोविड का सबसे ज्यादा खतरा बताया जा रहा है। हाल के दिनों में कोविड संक्रमित डायबिटीज के मरीजों का डेथ रेट ज्यादा आया है। आए दिन ही कोविड की चपेट में आने वाले डायबिटीज मरीजों में नए-नए सिम्प्टम्स देखने को मिल रहे हैं जिन्हें हमें गंभीरता से लेने की जरूरत है। जो पहले से सहैत संबंधी समस्याएं झेल रहे हैं उनके लिए नया स्ट्रेट बेहद घातक साबित हो रहा है। मधुमेह के रोगी अगर अपने अंदर हो रहे बदलाव की पहचान कर सही समय पर उपचार कर लें तो खतरे को टाला जा सकता है।
खराब रक्त शर्करा स्तर: डायबिटीज मरीजों का खराब रक्त शर्करा का स्तर शरीर में इंसुलिन प्रोडक्शन की मात्रा को कम कर देता है जिसके चलते इन्सुलिन सिस्टम पर दबाव पड़ता है। या कहे कि खराब ब्लड ग्लूकोज लेवल के चलते इन्सुलिनटी कम होने लगती है

जिससे खतरा बढ़ जाता है। इस सिचुएशन में मधुमेह से पीड़ित रोगी का रक्त प्रवाह भी खराब होने लगता है और दूसरी तरह की समस्याएं भी पनपने लगती हैं। जिन लोगों की कंडीशन अस्पताल में भर्ती होने की होती है, उनमें वैस्क्युलर समस्याएं भी हो सकती हैं जैसे कार्डियो वैस्क्युलर लेप्स, रेंस्पिरटरी डिक्लाइन, क्रोनिक लंग डिजीज। इसके अलावा, कोविड-19 के कुछ लक्षण और भी हो सकते हैं, जिनसे डायबिटीज के मरीजों को ज्यादा सावधान रहने की जरूरत है। कोरोना वायरस की दूसरी लहर में मरीजों में कई तरह के असामान्य लक्षण देखे जा रहे हैं।
जैसे त्वचा पर चकत्ते, लाल धब्बे, सूजन और एलर्जी आदि। ऐसे में कोरोना वायरस के ज्यादातर लक्षण जैसे पैर की उंगलियों पर चकत्ते पड़ना, खुजली होना, त्वचा पर लाल धब्बे आदि डायबिटीज के मरीजों द्वारा अनुभव किए जाने की अधिक संभावना है। डायबिटीज मरीजों के ब्लड में शुगर लेवल ज्यादा होने पर त्वचा शुष्क हो जाती है जिसके चलते शरीर पर सूजन, दाग, धब्बे, फफोले, लाल धब्बे, खुजली, चकत्ते, फफोले आदि पड़ जाते हैं। अब ये सभी कोविड संक्रमण के लक्षणों में से भी एक हैं। इसलिए डायबिटीज के मरीजों को अपनी त्वचा का बेहद ख्याल रखना चाहिए जिससे वह कोरोना वायरस के इन शुरूआती लक्षणों को पहन कर कर ट्रीटमेंट ले सकें।

ऑक्सीजन का गिरना
कोविड-19 से जूझ रहे मरीजों के लिए ऑक्सीजन लेवल में गिरावट आना सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। ऐसी सिचुएशन में डायबिटीज मरीज की और भी ज्यादा इन्सुलिनटी कमजोर हो जाती है। डायबिटीज के मरीज या कमजोर इन्सुलिनटी वाले रोगियों में ऑक्सीजन की कमी और सांस फूलना, सांस लेने में तकलीफ, सीने में दर्द, दिल से जुड़ी बीमारियां आदि संबंधित लक्षणों से पीड़ित होने की संभावना अधिक होती है। हाइपोक्सिया ऐसी स्थिति है जिसमें बिना कोई लक्षण दिखे ही अचानक से ऑक्सीजन लेवल बहुत कम हो जाता है। आमतौर पर यह स्थिति डायबिटीज से पीड़ित रोगियों में अधिक देखी गई है। उन्हें अपनी सेहत पर हर पल ध्यान देने की जरूरत है।

ब्लैक फंगस
कोरोना संक्रमित मरीजों में अब ब्लैक फंगस का संक्रमण भी तेजी से फैल रहा है। एक्सपर्ट्स ब्लैक फंगस को एक गंभीर बीमारी बता रहे हैं। यह रहस्यमयी फंगस अनियंत्रित डायबिटीज, स्टैरॉयड की वजह से कमजोर इन्सुलिनटी या किसी अन्य बीमारी जूझ रहे लोगों को शिकार बना रहा है।
इस बीमारी के मुख्य लक्षण हैं आंखों में लालपन, सिरदर्द, बुखार, सांस लेने में तकलीफ आदि शामिल हैं। डायबिटीज, इन्सुलिनटी को कमजोर बनाकर संक्रमण के खतरे को बढ़ा देती है।



तेजी से बढ़ेगी हाइट, बस रोजाना केवल खूबसूरत ही नहीं बल्कि मल्टी-टैलेंटेड हैं नायरा बनर्जी



अगर उम्र के हिसाब से आपको या फिर आपके बच्चों की हाइट छोटी रह गई है तो यकीनन इसे बढ़ाने के लिए आप काफी मशकतें करते होंगे। यह जरूरी भी है क्योंकि अच्छी हाइट पर्सनालिटी में चार चांद लगाने में मदद जो करती है। इसके लिए आप चाहें तो कुछ एक्स्प्रेसर प्लांट्स दबा सकते हैं। आइए आज हम आपको कुछ ऐसे एक्स्प्रेसर प्लांट्स बारे में बताते हैं, जिन्हें रोजाना दबाकर तेजी से हाइट बढ़ाई जा सकती है।

तया है एक्स्प्रेसर प्लांट्स?

शरीर में कई ऐसे प्रेशर प्लांट्स होते हैं, जिनका संबंध शरीर के विभिन्न भागों से होता है। इन प्लांट्स के द्वारा शरीर के विभिन्न हिस्सों जैसे पैरों और हाथों के महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर दबाव डालकर विभिन्न रोगों का इलाज किया जाता है।

आइब्रो के बीच का हिस्सा दबाएं

हाइट को बढ़ाने के लिए रोजाना आइब्रो के बीच का हिस्सा दबाना फायदेमंद साबित हो सकता है। इसके लिए आप अपनी आइब्रो के बीचों-बीच कोई भी एक उंगली रखें और उससे माथे पर दबाव बनाएं। इसके बाद इसे सर्कुलेशन मोशन में घुमाएं। आप इसे 10-15 बार दबा सकते हैं। बेहतर परिणाम के लिए दिन में 2 बार इस एक्स्प्रेसर प्लांट को दबाएं,

हाथ के अंगुठे के नीचे दबाएं

अपनी हाइट बढ़ाने में हाथ के अंगुठे के निचले हिस्से को दबाना काफी प्रभावी है। इसके लिए आप पहले अपने दाएं हाथ को आगे करें और फिर इसके अंगुठे के नीचे के हिस्से को बाएं हाथ के अंगुठे से दबाएं। आप इसे 10 बार दबा सकते हैं। इसके बाद दाएं हाथ के अंगुठे से बाएं हाथ के अंगुठे के निचले हिस्से को दबाएं। बेहतर परिणाम के लिए दिन में 2 बार इसका अभ्यास करें।

पैरों के तलवों के बीच से दबाएं

हाइट बढ़ाने के लिए पैरों के तलवों को दबाना भी लाभकारी माना जाता है। इसके लिए पहले अपने दोनों पैरों के तलवों के बीच में दोनों हाथों की कोई दो उंगली रखें

और फिर इस प्लांट को दबाएं। आप 8-10 बार इस प्लांट को दबा सकते हैं। इसके नियमित अभ्यास से आपका कद तेजी से बढ़ने लगेगा। इसी के साथ इससे आप कई तरह अन्य स्वास्थ्य लाभ भी मिलने लगेंगे।

पिंडलियों को दबाएं

हाइट बढ़ाने के लिए पिंडलियों को दबाना भी फायदेमंद है। इसलिए रोजाना अपनी पिंडलियों को हाथों की मदद से कम से कम 10 बार दबाएं। इससे बेहतर परिणाम पाने के लिए आप पिंडलियों को दिन में दो-तीन बार दबा सकते हैं। हालांकि, ध्यान रखें कि अगर आपके बच्चे की हाइट छोटी है तो एक्स्प्रेसर प्लांट्स की बजाय उसे बचपन से ही हाइट बढ़ाने के लिए एक अच्छी डाइट दें और कुछ एक्सरसाइज करवाएं।



टेलिविजन पर ऐसे बहुत से खूबसूरत चेहरे हैं जिन पर अक्सर लोगों की नजरें टहर जाती हैं। ऐसे चेहरों में से एक हैं एक्ट्रेस नायरा बनर्जी। नायरा बनर्जी बहुत ज्यादा सीरियलों में नजर तो नहीं आई हैं मगर उनकी खूबसूरती के लाखों दीवाने हैं। आइए, दिलकश तस्वीरों के साथ जानते हैं इस खूबसूरत बंगाली नायरा बनर्जी का जन्म मुंबई में 14 मई 1987 को हुआ था। नायरा के पिता एक मैकेनिकल इंजिनियर हैं और भारतीय नौसेना में अधिकारी रह चुके हैं। नायरा की मां वायोरॉज में रिसर्चर और कॉन्टेंट राइटर रह चुकी हैं।

नायरा केवल खूबसूरत ही नहीं बल्कि मल्टी-टैलेंटेड हैं। नायरा ने मुंबई के एक लॉ कॉलेज से डिग्री ली है। नायरा ने अपनी मां से हिंदुस्तानी क्लासिकल म्यूजिक की ट्रेनिंग ली है। नायरा ने कथक डांस भी सीखा है। नायरा ने साल 2009 में तेलुगु फिल्म 'आ ओक्कुडू' से एक्टिंग डेब्यू किया।

इसके बाद नायरा ने लगातार 3 और तेलुगु फिल्मों में काम किया। फिर नायरा ने हिंदी इंडस्ट्री की तरफ थोड़ा ध्यान दिया। नायरा ने साल 2012 में हिंदी फिल्म 'कमाल धमाल मालामाल' से बॉलिवुड में डेब्यू किया। हालांकि नायरा ज्यादा फिल्मों में टिक नहीं पाई और उन्होंने अभी तक 'इश्क ने क्रेजी किया रे' और 'वन नाइट स्टैंड' जैसी फिल्मों में ही काम किया है। नायरा ने फिल्म 'अजहर' में अक्सर डायरेक्टर के तौर पर भी काम किया था। नायरा भले ही बॉलिवुड में अभी तक अपने पैर न जमा पाई हों मगर साउथ की इंडस्ट्री में उनका खूब नाम है। नायरा 15 से ज्यादा साउथ की फिल्मों में काम किया है जिनमें केवल तेलुगु ही नहीं बल्कि कन्नड़, तमिल और मलयालम फिल्मों भी शामिल हैं। नायरा ने हिंदी टेलिविजन का जैसे ही रुख किया वैसे ही वह लोगों की नजरों में आ गई। नायरा ने सीरियल 'दिव्य दृष्टि' से हिंदी टीवी में कदम रखा। इसके बाद नायरा ने कॉमिडी सीरियल 'एक्सक्लूजिव मी मैडम' में काम किया जिसमें उनके किरदार को काफी सराहना मिली थी। फिल्मों और टीवी के अलावा नायरा ने वेब सीरीज में भी अपने कदम रख दिए हैं। नायरा ने ऑल्ट बालाजी के 'जुबान संभालके' और 'हेलोजी' में काम किया है। इसके अलावा नायरा ने जी5 की सीरीज 'स्काईफायर' में भी काम किया है।

बिग बॉस 15 को ओटीटी प्लेटफॉर्म पर होस्ट करेंगे करण जोहर

बिग बॉस टीवी का लोकप्रिय शो माना जाता है। बिग बॉस के चौदहवें सीजन के खत्म होने के बाद से प्रशंसक आगामी सीजन की प्रतीक्षा में हैं। हाल में खबर सामने आई थी कि इस बार बिग बॉस 15 के ओटीटी वर्जन को सलमान खान होस्ट नहीं करेंगे। शो को ओटीटी पर होस्ट करने के लिए कई हस्तियों के नाम सुर्खियों में थे। अब खबर है कि बिग बॉस 15 को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर फिल्म निर्माता करण जोहर होस्ट करेंगे। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि बिग बॉस 15 के डिजिटल वर्जन को करण होस्ट करेंगे। शो को होस्ट करने के लिए सिद्धार्थ शुक्ला, फरहा खान और रोहित शेट्टी जैसी हस्तियों के नाम चर्चा में थे। इस शो का प्रसारण स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म वूट पर 8 अगस्त से शुरू हो जाएगा। करण शो में सलमान को रिप्लेस करेंगे। कॉफी विद करण के कई सीजन को होस्ट करने के बाद करण इस बार नई भूमिका में दिखेंगे। करण ने बिग बॉस 15 को ओटीटी पर होस्ट करने को लेकर कहा, मैं और मेरी मां बिग बॉस के बहुत बड़े प्रशंसक हैं और इसे एक दिन के लिए भी मिस नहीं करेंगे। एक दर्शक के रूप में यह शो मेरे लिए बेहद मनोरंजक है। दशकों से मैंने शो की मेजबानी का आनंद लिया है और अब बिग बॉस के साथ यह करूंगा। उन्होंने आगे कहा कि यह उनकी मां का सपना सच होने जैसा है। करण ने दावा किया है कि बिग बॉस का ओटीटी संस्करण बहुत अधिक सनसनीखेज और नाटकीय होने वाला है। उन्होंने कहा कि उन्हें आशा है कि वह दर्शकों और अपने दोस्तों की उम्मीदों पर खरा उतरेंगे। एक सूत्र ने कहा, करण बिग बॉस के प्रारूप का आनंद लेते हैं। इस बार का डिजिटल संस्करण युवा दर्शकों को आकर्षित करेगा। करण शो को होस्ट करने के लिए काफी उत्साहित हैं। उन्होंने डेटिंग शो व्हाट द लव को भी होस्ट किया था। पिछले कुछ सालों से बिग बॉस का चेहरा रहे सलमान ने कुछ दिन पहले इस शो के डिजिटल वर्जन का पहला ट्रेजर लॉन्च किया था। इसमें उन्होंने कहा था, बिग बॉस का यह सीजन टेलीविजन से 6 सप्ताह पहले ओटीटी प्लेटफॉर्म पर रिलीज होगा। टीवी पर मैं होस्ट करूंगा कलर्स चैनल पर। वूट पर 6 सप्ताह तक प्रसारण होने के बाद कुछ चुनिंदा प्रतिभागियों के साथ यह शो टीवी पर प्रसारित होगा। बिग बॉस का प्रसारण कलर्स चैनल पर होता है। यह लोकप्रिय शो अमेरिकी टीवी रियलिटी शो बिग ब्रदर प्रारूप का अनुसरण करता है। घर के मालिक को बिग बॉस के नाम से जाना जाता है, जिनकी घर में उपस्थिति उनकी आवाज से है। बिग बॉस की सफलता अब 15वें सीजन में कदम रख चुकी है।



हेलेन के हिंदी रीमेक के लिए तैयार जान्हवी, अगस्त से शुरू कर सकती हैं शूटिंग

पिछले काफी समय से जान्हवी कपूर सुपरहिट मलयालम फिल्म हेलेन के हिंदी रीमेक को लेकर चर्चा में हैं। भले ही अब तक खुद जान्हवी ने अपनी इस फिल्म के बारे में बात ना की हो, लेकिन आए दिन इससे जुड़ी नई-नई जानकारी सामने आ रही हैं। अब खबर है कि जान्हवी ने फिल्म की शूटिंग शुरू करने के लिए कामर कस ली है। वह अगस्त से शूट शुरू करने वाली हैं। आइए जानते हैं और क्या जानकारी मिली है। फिल्म से जुड़े सूत्र ने बताया कि महिला केंद्रित फिल्म हेलेन के हिंदी रीमेक को इनडोर शूटिंग अगस्त से शुरू होगी इसके बाद फिल्म की आउटडोर शूटिंग होगी। प्रोडक्शन टीम फिलहाल इसी तैयारी में लगी है। रिपोर्ट में कहा गया है कि मौजूदा यात्रा प्रतिबंधों को ध्यान में रखते हुए



फिल्म की शूटिंग विदेश में करने की योजना रद्द हो गई है। फिल्म भारत में ही शूट होगी। जान्हवी अभिनीत इस फिल्म का नाम मिली हो सकता है। इस फिल्म को जान्हवी के पिता बनी कपूर जी स्टूडियो के साथ मिलकर प्रोड्यूस कर रहे हैं। चर्चा है कि जान्हवी ने अपने किरदार के साथ न्याय करने के लिए कड़ी मेहनत की है। अभिनेता मनोज पाहवा इस फिल्म में जान्हवी के पिता की भूमिका निभा सकते हैं। निर्देशक मुथुकृती जैवियर फिल्म के हिंदी रीमेक का निर्देशन कर रहे हैं, जो असल फिल्म के निर्देशक थे। फिल्म में जान्हवी की जोड़ी अभिनेता सनी कौशल के साथ बन सकती है। हेलेन 15 नवंबर, 2019 को रिलीज हुई हिट मलयालम फिल्म है। इसे राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुका है।

भूषण कुमार के साथ एक्शन फिल्म कर सकते हैं शाहिद कपूर

शाहिद कपूर ने जब से फिल्म कबीर सिंह में काम किया है, उनके पास फिल्मों की कमी नहीं है। वो बात अलग है कि अब शाहिद बहुत सूझ-बूझ से कदम बढ़ा रहे हैं। फिल्म जर्सी की रिलीज का इंतजार कर रहे शाहिद ने अब बॉलिवुड के जाने-माने निर्माता भूषण कुमार की एक एक्शन फिल्म साइन कर ली है। शाहिद को फिल्म का कहानी बेहद पसंद आई है। आइए जानते हैं इस बारे में और क्या जानकारी मिली है। सूत्रों के मुताबिक इस फिल्म का निर्माण भूषण कुमार और अमर बुट्टला करेंगे। अमर के साथ शाहिद पिछले काफी समय से इस फिल्म पर चर्चा कर रहे थे और अब उन्होंने इसका हिस्सा बनने के लिए रजामंदी दे दी है। रिपोर्ट में बताया गया है कि यह एक एक्शन थ्रिलर फिल्म है, जिसकी शूटिंग शाहिद इस साल दिसंबर में शुरू करेंगे। फिल्म के पहले शेड्यूल को भारत में शूट किया जाएगा और बचे हुए शेड्यूल को शूटिंग विदेश में होगी। शाहिद जल्द ही बॉलीवुड की मशहूर निर्देशक जोड़ी राज और डीके की वेब सीरीज में नजर आएंगे। उनके इस वेब शो का नाम अभी तय नहीं हुआ है, लेकिन शाहिद इसे लेकर बेहद उत्साहित हैं क्योंकि इसके जरिए वह डिजिटल जगत में एंटी कर रहे हैं। उनकी यह सीरीज अमेजन प्राइम पर रिलीज होगी। इन दिनों शाहिद इसी सीरीज की शूटिंग कर रहे हैं। सितंबर में इसकी शूटिंग पूरी करने के बाद वह फिल्म जर्सी का प्रमोशन शुरू करेंगे। शाहिद पिछले काफी समय फिल्म महाभारत को लेकर भी सुर्खियों में हैं। सूत्रों के मुताबिक अगले साल इस फिल्म की शूटिंग शुरू होगी।



हॉट फोटोशूट को लेकर चर्चा में आई राइमा सेन



अभिनेत्री राइमा सेन अक्सर अपने स्टाइल और फैशन को लेकर सुर्खियों में बनी रहती हैं। उनका फैशन लोगों का ध्यान अपनी तरफ खींचता है। अब एक बार फिर से राइमा सेन अपने फैशन और स्टाइल की वजह से चर्चा में आई हैं। राइमा सेन अपने फैशन सेंस की वजह से चर्चा में आई हैं। अभिनेत्री राइमा सेन ने एक हाल ही में एक ताजा फोटो शूट करवाया है। जिसमें उनका काफी बोलड और हॉट अवतार दिखाई दे रहा है। सोशल मीडिया पर जैसे ही राइमा सेन के फोटोशूट की तस्वीरें सामने आईं वैसे ही वायरल हो होने लगी। अभिनेत्री राइमा सेन ने हाल ही में फोटोशूट करवाया है। जिसमें वो बिना टॉप और टी-शर्ट के सिर्फ डेनिम जैकेट में पोज देते हुए नजर आ रही हैं। राइमा सेन की इन तस्वीरों में आप देख सकते हैं कि उन्होंने सिर्फ डेनिम जैकेट में दिखाई दे रही हैं। सोशल मीडिया पर जैसे ही राइमा सेन की फोटोशूट की हॉट तस्वीरें सामने आईं वैसे ही हंगामा मच गया है। तस्वीरों में वो बिना टीशर्ट के सिर्फ डेनिम जैकेट पहने नजर आ रही हैं। हालांकि इस दौरान उनका लुक काफी हॉट और सेक्सी लग रहा है। राइमा सेन ने अपनी कई सारी तस्वीरें इंस्टाग्राम पर शेयर की हैं। जिसमें वो अलग अलग अंदाज में पोज देते हुए दिखाई दे रही हैं। हर तस्वीर एक अलग ही की खूबसूरती दिखाई दे रही है। बीते दिनों उन्हें एक नेट टॉप में बिना किसी पैट और शर्ट के तस्वीर शेयर की थी। कई लोगों ने उनके लुक की जमकर तारीफ की थी। बता दें ये पहली बार नहीं है इससे पहले भी राइमा सेन अपने बोलड फोटोशूट और अवतार के लिए चर्चा में आ चुकी हैं। सोशल मीडिया पर वो एक्टिव रहती हैं और अपनी तस्वीरें शेयर कर सुर्खियों में आती हैं।

नाभि में जलन और दर्द को न समझें सामान्य समस्याएं, इन घरेलू उपायों से पाएं राहत



अगर आपको कभी भी अचानक से नाभि में जलन और दर्द की समस्या होने लगे है तो इसे नजरअंदाज न करें क्योंकि इसके कारण आपको उठने-बैठने में काफी दिक्कत हो सकती है। यह पेट में इन्फेक्शन के प्रभाव और कुछ जरूरी पोषक तत्वों की कमी के कारण हो सकता है। आइए आज हम आपको कुछ ऐसे घरेलू नुस्खे बताते हैं जिन्हें अपनाकर आप नाभि में होने वाली जलन और दर्द से जल्द राहत पा सकते हैं।

नारियल के तेल का करें इस्तेमाल

नारियल का तेल एंटी-इन्फ्लेमेटरी और एंटी-माइक्रोबियल गुण के साथ-साथ सूटिंग इफेक्ट से युक्त होता है, जो नाभि की जलन और दर्द को दूर करने में सक्षम है। समस्या से राहत पाने के लिए बस आप नारियल के तेल को उंगली की मदद से अपनी नाभि पर लगाकर छोड़ दें ताकि वह अच्छे से त्वचा अब्सॉर्ब हो जाए। आप इस घरेलू नुस्खे को दिन में कई बार दोहरा सकते हैं।

अजवाइन का करें सेवन

कई बार गैस, अपच या फिर कब्ज जैसी पेट से जुड़ी समस्याओं के कारण भी नाभि में जलन और दर्द हो सकता है और इसे दूर करने के लिए आप अजवाइन का सेवन कर सकते हैं। समस्या से राहत पाने के लिए आधी चम्मच से थोड़ी कम अजवाइन में थोड़ा काला नमक मिलाएं और फिर गुनगुने पानी के साथ इस मिश्रण की फंकी मारें। इस नुस्खे से आपको काफी जल्दी आराम मिलेगा।

सरसों के तेल से करें मालिश

जब भी नाभि में जलन और दर्द की समस्या हो तो इससे राहत पाने के लिए आप

सरसों के तेल का इस्तेमाल भी कर सकते हैं। राहत के लिए सरसों के तेल की कुछ बूंदें नाभि में डालें। ऐसा तीन से चार दिनों तक करें। सरसों के तेल में कुछ ऐसे विशेष गुण मौजूद होते हैं, जो नाभि में होने वाली जलन और दर्द को जल्द दूर करने में सहायक है।

हॉग भी है प्रभावी

पेट में गैस बनने की वजह से भी

नाभि में जलन और दर्द की समस्या हो सकती है। पेट में गैस की समस्या दूर करने के लिए हॉग का इस्तेमाल करना लाभदायक साबित हो सकता है। समस्या से राहत के लिए पहले एक चुटकी हॉग को आधी चम्मच गुनगुने पानी में घोल लें और फिर इसे नाभि में डालकर छोड़ दें। यकीनन इस घरेलू नुस्खे से आपको काफी आराम मिलेगा।

फिल्म 'आदिपुरुष' में किरदार के साथ जिम्मेदारी का अहसास भी: कृति सेनन

अभिनेत्री कृति सेनन ने कहा कि उन्हें 'आदिपुरुष' में देवी सीता का किरदार निभाने के साथ आने वाली जिम्मेदारियों का अहसास है और इस बात से टीम भी भलीभांति परिचित है। ओम राजत के निर्देशन में बन रही यह फिल्म हिंदू महाकाव्य 'रामायण' पर आधारित है और इसमें प्रभास भगवान राम और सैफ अली खान लंकेश की भूमिका में नजर आएंगे। लंबे समय से इस प्रकार के संवेदनशील मुद्दों को लेकर कई कलाकारों को सोशल मीडिया पर ऑनलाइन आलोचना का शिकार होना पड़ा है क्योंकि दर्शक उन पर उनकी धार्मिक भावनाओं को आहत करने का आरोप लगा रहे थे। इसी के चलते अभिनेता अक्षय कुमार की फिल्म 'लक्ष्मी बम' का नाम बदलकर 'लक्ष्मी' किया गया और वेब सीरीज 'तांडव' का एक दृश्य भी विवाद के घेरे में था। 'आदिपुरुष' के कलाकार सैफ अली खान ने भी इस फिल्म पर की गई एक टिप्पणी पर एक साक्षात्कार में माफी मांगी। सेनन ने कहा कि टीम को 'आदिपुरुष' की कहानी को संवेदनशीलता के साथ दिखाने का महत्व पता है। सेनन ने बताया, निश्चित तौर पर हमें एक दायरे के भीतर रहना होगा और हम जो किरदार अदा कर रहे हैं, उसकी जिम्मेदारी को महसूस करना होगा। सोभाग्य से मैं एक शानदार निर्देशक के हाथों में हूँ, जिन्होंने इस विषय और सभी किरदारों पर खूब जानकारीयें जुटाई हैं। इस फिल्म का निर्माण भूषण कुमार की 'टी-सीरीज' कर रही है और इसकी शूटिंग इस साल की शुरुआत में शुरू हुई। सेनन इस फिल्म के बड़े हिस्से की शूटिंग पूरी कर चुकी हैं। सेनन की यह पहली ऐसी फिल्म है, जिसमें खूब वीएफएक्स का इस्तेमाल हुआ है। अभिनेत्री ने कहा कि ब्लू स्क्रीन और क्रोमा पर शूटिंग का 'बिक्कुल अलग तरह का अनुभव' रहा।



वन-टू-वन

माशिम की 12वीं कक्षा का परीक्षा परिणाम 29 को

ऑनलाइन ही घोषित होंगे परीक्षा परिणाम

भोपाल (ए)। मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल (माशिम) की 12वीं कक्षा का परीक्षा परिणाम आगामी 29 जुलाई को घोषित होगा। माध्यमिक शिक्षा मंडल 12वीं का परीक्षा परिणाम ऑनलाइन ही घोषित करेगा। इस बार प्रायोग्य सूची जारी नहीं की जाएगी। जानकारी के अनुसार, कक्षा 12वीं की अंकसूची में कक्षा 10 वीं के पांच मुख्य विषयों के आधार पर नंबर दिए जाएंगे। 10वीं के सभी विषयों से 12वीं के विषयों की मैपिंग कर रिजल्ट बनाया गया है। माध्यमिक शिक्षा मंडल ने हायर सेकेण्डरी (12वीं) परीक्षा, हायर सेकेण्डरी व्यवसायिक सर्टिफिकेट परीक्षा और हायर सेकेण्डरी (अंध, मूक बधिर) श्रेणी के परीक्षा परिणाम विद्यार्थी और अभिभावक के लिए विभिन्न पोर्टलों के माध्यम से परीक्षा परिणाम जानने की सुविधा उपलब्ध करायी है। सभी विद्यार्थी एमपीबीएसई मोबाइल एप या एमपी मोबाइल एप पर % नो युवर ?रिजल्ट% का चयन करने के बाद अपना अनुक्रमांक और आवेदन क्रमांक दर्ज कर परीक्षा परिणाम जान सकेंगे। गणित के आधार पर 12वीं में गणित व बुक कॉपींग व एकाडेंटसी में नंबर दिए जाएंगे। साथ ही बेस्ट आफ फाइव पद्धति के अनुसार 10वीं के सबसे अधिक अंकों के विषयों के अतिरिक्त छठवां विषय 12वीं के जिस विषय से मैप किया जाएगा उसमें 12वीं के तृतीय भाषा विषय के अंक प्रदान किए जाएंगे। जानकारी के अनुसार नतीजे से असंतुष्ट विद्यार्थी के लिए एक से 25 सितंबर के बीच विशेष परीक्षा आयोजित की जाएगी। इसके लिए एक से दस अगस्त के बीच ऑनलाइन पंजीयन कराना होगा। उल्लेखनीय है कि इस साल 12वीं की परीक्षा में साढ़े सात लाख विद्यार्थी शामिल हुए थे। वर्ष 2020 में 12वीं में 69 फीसद और 2019 में 72.37 प्रतिशत परीक्षा परिणाम रहा था। अधिकारियों ने बताया कि 10वीं में विज्ञान विषय के आधार पर 12वीं में सर्वाधिक विषयों में अंक दिए जाएंगे। 10वीं में विज्ञान के नंबरों के आधार पर 12वीं के फिजिक्स, केमिस्ट्री, बायोलॉजी, इंफार्मेशन प्रैक्टिस, एग्रीकल्चर, होम साइंस, बायो टेक्नालॉजी, फिजिकल एजुकेशन, होम मैनेजमेंट, एलीमेंट आफ साइंस समेत अन्य विषयों में नंबर मिलेंगे।

मप्र में कंपनियों को नहीं मिल रहे योग्य इंजीनियर

भोपाल (ए)। मध्य प्रदेश में कंपनियों को योग्य इंजीनियर नहीं मिल रहे हैं, इसीलिए स्थानीय युवाओं को रोजगार देने में दिक्कत आ रही है। देशी साफ्टवेयर कंपनी इंफोसिस ने इंदौर जिला प्रशासन को दिए जवाब में संभावना जताई है कि अगले एक साल में वह इंदौर के अपने कैम्पस में एक हजार युवाओं को रोजगार देगी। टीसीएस ने भी अगले साल तक दुगुने रोजगार देने का वादा किया है। टीसीएस ने इंदौर में 4500 लोगों को रोजगार दिया है और उम्मीद जगाई है कि अगले साल तक वह इतने बेरोजगारों को और रोजगार देगी। दोनों कंपनियों ने प्रदेश के कितने युवाओं को यहां रोजगार दिया है और कितने बाहर से स्थानांतरित किए हैं, इस बारे में जवाब नहीं दिया है। प्रशासनिक अधिकारियों के मुताबिक, टीसीएस ने यह भी कहा है कि उसने अपनी 60 प्रतिशत जमीन का उपयोग कर लिया है और बाकी का भी जल्द किया जाएगा। इंफोसिस ने करीब 62 एकड़ जमीन का उपयोग किया है। दोनों कंपनियों ने अपनी सफाई में यह भी कहा है कि कोरोना के कारण कैम्पस बंद है। कर्मचारी वर्क फ्राम होम हैं, इसलिए कैम्पस का विस्तार नहीं कर पा रहे हैं। टीसीएस और इंफोसिस की तरफ से जवाब आने के बाद प्रशासन ने तय किया है कि जल्द ही दोनों कंपनियों के उच्च प्रबंधन के साथ एक बार बैठक की जाएगी। इसके बाद तय किया जाएगा कि आगे क्या करना है। उल्लेखनीय है कि इंदौर में सुपर कारिडोर पर दोनों कंपनियों को कुल 230 एकड़ जमीन लीज पर उपलब्ध कराई गई है। इसमें इंफोसिस को 130 एकड़ और टीसीएस को 100 एकड़ जमीन दी गई है। दोनों कंपनियों को राज्य शासन ने इस शर्त पर जमीन दी थी कि वे अपने यहां 50 प्रतिशत रोजगार मध्य प्रदेश के साफ्टवेयर इंजीनियर और आइटी प्रोफेशनल्स को देंगे, लेकिन दोनों कंपनियां अब तक इस उम्मीद पर खरी नहीं उतरी हैं। इसी कारण कुछ दिन पहले जिला प्रशासन ने दोनों कंपनियों को लीज शर्तों के उल्लंघन का नोटिस जारी किया था। दोनों कंपनियों ने इसका जवाब 2 जिला प्रशासन को सौंप दिया है।

कोरोना गाईड लाईन का उद्घाटन करने पर नगर निगम की सख्त कार्यवाही

भोपाल (ए)। नगर निगम, भोपाल द्वारा कोविड-19 की गाईड लाईन का पालन न करते हुए मास्क न लगाने तथा सोशल डिस्टेंसिंग का पालन न करने वालों के खिलाफ सख्त कार्यवाही निरंतर की जा रही है। निगम के स्वास्थ्य विभाग की टीमों ने अपने-अपने जोन क्षेत्रों के अंतर्गत कार्यवाही करते हुए मास्क न पहनने वालों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही करते हुए 29 व्यक्तियों पर 03 हजार रुपये का साफ्ट फाईन कर राशि वसूल की जबकि सोशल डिस्टेंसिंग एवं कोविड गाईड लाईन का उल्लंघन करने पर 06 व्यक्तियों पर कार्यवाही कर 02 हजार 900 रुपये का फाईन किया गया। निगम अमले ने नागरिकों को मास्क अनिवार्य रूप से लगाने की समझाइश दी और सोशल डिस्टेंसिंग का हर हाल में पालन करने की भी समझाइश दी। मध्य प्रदेश शासन एवं जिला प्रशासन द्वारा मास्क न पहनने के विरुद्ध सख्त कार्यवाही किये जाने के आदेश के परिपालन में निगम आयुक्त के.वी.एस. चौधरी के आदेश पर निगम के सभी जोनों के अंतर्गत मास्क न लगाने वालों के विरुद्ध कार्यवाही करते हुए निगम अमले ने सोमवार को 29 व्यक्तियों पर 03 हजार रुपये का फाईन किया गया और मास्क पहनने एवं सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करने की समझाइश भी दी गई। जोन क्रमांक 04 में सार्वजनिक स्थल पर मूत्र विसर्जन करने के 01 प्रकरण में 02 हजार रुपये, जोन क्रमांक 15 में सार्वजनिक स्थल पर मूत्र विसर्जन के 02 प्रकरण में 200 रुपये तथा ग्रीन वेस्ट व गंदगी के 03 प्रकरण में 700 रुपये जुर्माना किया गया।

बंद पड़ी खदानों पर अनिवार्यता फेसिंग कराए: कलेक्टर

(सभी एसडीएम और खनिज अधिकारी को निर्देश दिए)

पुष्पांजली टुडे

भोपाल। कलेक्टर अविनाश लवानिया ने सभी एसडीएम और खनिज अधिकारी को निर्देश दिए हैं कि जिले में बंद पड़ी खदानों पर अनिवार्य रूप से फेसिंग कराए और इसके संबंध में सभी एसडीएम अपने क्षेत्रों पर लगातार भ्रमण के दौरान देखे की तारों की फेसिंग से बंद पड़ी खदानों को कवर किया जाए। इसके लिए अभियान चलाकर बंद पड़ी खदानों से सख्ती से कार्रवाई कर फेसिंग लगावाए।

कलेक्टर श्री लवानिया ने निर्देश दिए कि जिले में जितनी भी लीज में दी गई भूमि या खदानों को भू-राजस्व के नियमाधीन भूमि के



उपयोग के अनुसार सभी शुल्क वसूले जाएं। किसी भी स्थिति में शासन का राजस्व का नुकसान नहीं होना चाहिए। संभागायुक्त महोदय

द्वारा बैठक में दिए गए निर्देश अनुसार सभी खदानों का सीमांकन कराकर राजस्व वसूली कराए। कलेक्टर ने कहा कि एसडीएम कोर्ट

साइकिल सवार को बचाने के चक्कर में अनियंत्रित होकर पलटी रोडवेज बस रोडवेज की टक्कर से वृद्ध साइकिल सवार की गहरे तालाब में गिरने से हुई मौत

सोनु कुमार मायुर, पुष्पांजली टुडे

एटा। साइकिल सवार वृद्ध को बचाने के चक्कर में रोडवेज बस अनियंत्रित होकर पलट गई जिससे उसमें सवार 15 यात्रियों के छुटपुट चोंटे आई हैं। सभी यात्रियों को पुलिस ने दूसरे बहाने बिठाकर उन्हें गंतव्य की ओर भेज दिया। वहीं बस की टक्कर से साइकिल सवार वृद्ध भी गहरी तलाब में जा गिरा जिससे उसकी भी मृत्यु हो गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने गोताखोरों की मदद से वृद्ध के शव को बरामद कर पोस्टमार्टम हेतु भेज दिया है फिलहाल वृद्ध की पहचान नहीं हो सकी है।



आगरा से 40 से 45 सवारी भरकर बरेली की ओर जा रही थी। कि तभी साइकिल पर सवार सामने से आ रहे वृद्ध को बचाने के चक्कर में रोडवेज अनियंत्रित होकर पलट गई वहीं रोडवेज में सवार 15 से 20 सवारियां चोटिल भी हुईं मौके पर एसडीएम सदर अलंकार अग्निहोत्री

आपको बता दें पूरा मामला थाना कोतवाली देहात क्षेत्र के अंतर्गत आगरा रोड के समीप गांव हरसिंहपुर का है जहां बदायूं डिपो



घर के ऊपर से गुजर रही एचटी लाइन छूने से युवक की मौत

सोनु कुमार मायुर, पुष्पांजली टुडे

एटा। जनपद के जलेसर सकरौली थाना क्षेत्र के ग्राम हंसपुर में मंगलवार को छत के ऊपर से जा रही एचटी लाइन छू जाने से युवक की मौत हो गई। घटनाक्रम के अनुसार सकरौली थाना क्षेत्र के गांव हंसपुर में मंगलवार प्रात लगभग 8 बजे जगजीत का 22 वर्षीय पुत्र निरंकारी छत पर लघुशुका कर रहा था। तभी अचानक छत के ऊपर से जा रही एचटी लाइन से छू जाने से उसकी मौके पर

ही मौत हो गई। आक्रोशित ग्रामीण जरानी चौकी पहुंच गए तथा विद्युत लाइन हटवाने की मांग करने लगे। ग्रामीणों का आरोप है कि कई बार लिखित रूप से देने के बाद भी विद्युत विभाग द्वारा छत के ऊपर से एचटी लाइन नहीं हटाई गई। जिसके कारण आज यह घटना हुई है। मौके पर पहुंची थाना पुलिस ने युवक के शव को पंचनामा भर अंत्यपरीक्षण हेतु जिला चिकित्सालय भेजा है।

कार्यसमिति की बैठक में भाजपा के पदाधिकारियों का किया सम्मान मान सम्मान सत्कार भाजपा की पहली प्राथमिकत : हुकम सिंह खरोकडा

नेनाराम सिक्की व्यूरे, पुष्पांजली टुडे

पाली। खोड भाजपा खोड मण्डल कार्यसमिति की बैठक का आयोजन किया गया। कार्यसमिति की बैठक में भारतीय जनता पार्टी के जिला स्तर के पदाधिकारी मंडल स्तर के पदाधिकारी मंडल स्तर के कार्यकर्ताओं सहित वरिष्ठ भाजपा के कार्यकर्ताओं का पुष्प हार की माला एवं भारतीय जनता पार्टी का दुग्धा पहना कर भव्य स्वागत किया गया। खोड मंडल अध्यक्ष हुकम सिंह खरोकडा ने बताया कि भारतीय जनता पार्टी की मुख्य विचारधारा के साथ-साथ मान सम्मान सत्कार करना भारतीय जनता पार्टी की पहली प्राथमिकता। इसी संदर्भ में कार्यसमिति की बैठक के दौरान पदाधिकारियों सहित कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया। आईटी सेल संयोजक प्रभुसिंह राव ने बताया है कि बैठक सर्वप्रथम दिप प्रजलन कर बैठक का शुभारंभ किया बैठक में कारगिल युद्ध में

शहीद हुए वीर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई बैठक जिलामंत्री जयवर्धनजी रांकावत की अध्यक्षता में आयोजित गई। बैठक में आगामी संगठन के विस्तार व प्रदेश द्वारा आयोजित कार्यक्रम को लेकर चर्चा की गई जिसमें मुख्य वक्ता जिलामंत्री जयवर्धनजी रांकावत पूर्व जिला परिषद सदस्य नंदकिशोरजी परिहार आईटी सेल संयोजक प्रभुसिंह राव ने कार्यकर्ताओं एवं पार्टी समर्थकों को सम्बोधित किया।

संगठनात्मक नियुक्ति पर विचार

कार्यक्रम में जिलामंत्री जयवर्धनजी रांकावत ने बताया है कि भाजपा में बैठक के दौरान पदाधिकारियों सहित नियमानुसार बुध समिति, मोर्चाध्यक्ष, पदाधिकारी नियुक्त करने और वैसे पदाधिकारी नियुक्त करने है जो पदाधिकारी चुनाव में वंचित रहे और कार्य का अनुभव व

दतिया थाना बसई पुलिस द्वारा लूट में फरार आरोपी गणों को किया गिरफ्तार

व्युरे पुष्पांजली टुडे

दतिया / पुलिस अधीक्षक अमन सिंह राठौर द्वारा अपराधियों पर नकेल कसने हेतु चलाए जा रहे अभियान के आदेश के पालन में श्रीमान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री कमल मौर्य एवं एसडीओपी अनुभाग बड़ौनी दीपक नायक के कुशल मार्गदर्शन में थाना बसई के अपराध क्रमांक 110/21 धारा 394, 506,34 ताहि. 11,13 mp DPK ACT में फरार चल रहे आरोपी आकाश पुत्र ठाकुरदास लोधी उम्र 20 साल निवासी मंगुली सोमदेव पुत्र स्वर्गीय, लालाराम लोधी उम्र 20 साल निवासी कमालपुर बण्डा थाना पिछोर एवं एक बाल अपचारी निवासी पिछोर को बसई पुलिस द्वारा जरिए मुखबिर सूचना



पर से रड्ड गेट तिराहा पर दिनांक 26 जुलाई को गिरफ्तार किया गया एवं आरोपी सोमदेव लोधी व बाल अपचारी के कब्जे से घटना में प्रयुक्त आलाजरर दो अदिया (कट्टा) जप्त किया गया। एवं आरक्षक 204 नीरज शर्मा प्रधान

Hero Xtreme को जप्त किया गया उक्त कार्य करने में थाना प्रभारी वसई उप निरीक्षक रामसेवक शर्मा सहायक उपनिरीक्षक अशोक शर्मा सहायक उपनिरीक्षक प्रवीण बरुआ प्रधान आरक्षक 281 संदीप तिवारी आरक्षक 401 लक्ष्मी नारायण मिश्रा आरक्षक 637 भगवती प्रसाद शर्मा आरक्षक 45 गौरव ग्वाला आरक्षक चालक 297 मुकेश माझी की सराहनीय भूमिका रही।



प्रदेशाध्यक्ष स्वामी तेजानंद महाराज को शॉल ऑढकर किया समानित

पुष्पांजली टुडे

चैन्नई-सुबह आई सि एप मे श्री पुरन फेसन के ओपनिंग कार्यक्रम मे मुख्यअति के रूप में भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के वरिष्ठ राष्ट्रीय महामंत्री ऐवम तामीलनाडु पॉन ब्रोकर ऐवम ज्वेल्स एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष स्वामी तेजानन्द उपस्थित होकर सभी को आशीर्वाद प्रदान किया श्री पुरन फेसन के मालिक भंवरलाल पंवार, पुसराम, अशोक, किशनजी पंवार, तामीलनाडु पॉन ब्रोकर ऐवम ज्वेल्स एसोसिएशन अयापाक्रम ऐरीया कोषाध्यक्ष भगाराम गेहलोत सीरवी मोजुद थे।

हत्या व दहेज हत्या के मामले में दो फरार चल रहे अभियुक्त गिरफ्तार



सोनु कुमार मायुर, पुष्पांजली टुडे

एटा। थाना मारहरा पुलिस द्वारा दहेज हत्या के मामले में थाना मारहरा पर पंजीकृत दहेज अभिनियम से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त नरेन्द्र कुमार पुत्र किशनलाल निवासी सराय अहमद खॉ थाना मारहरा को ग्राम क्वातगंज के पास बाग के पास सडक के किनारे थाना मारहरा से गिरफ्तार कर

थानास्तर से आवश्यक वैधानिक कार्यवाही की जा रही है। वहीं थाना मारहरा पुलिस द्वारा थाना मारहरा पर हत्या के मामले में पंजीकृत अभियोग में फरार चल रहा अभियुक्त मंगल पुत्र कांशीराम निवासी नगरिया ताड थाना मारहरा, को ग्राम नगरिया ताड के गेट के पास पिवारी रोड पर थाना मारहरा से गिरफ्तार कर थानास्तर से आवश्यक वैधानिक कार्यवाही की जा रही है।



पार्टी में अपना सम्पूर्ण कर सके। भाजपा में कार्यकर्ता सबसे बड़ा पदाधिकारी होता है पूर्व जिला परिषद सदस्य नंदकिशोरजी परिहार ने

संबोधित कर संगठन की जानकारी दी मण्डल अध्यक्ष हुकमसिंह खरोकडा ने सबका अभिवादन कर आभार प्रकट किया

यह रहे मौजूद

जिलामंत्री जयवर्धनजी रांकावत मंडल अध्यक्ष हुकमसिंह खरोकडा आईटी सेल संयोजक प्रभुसिंह राव चांचौडी उपाध्यक्ष नारायणसिंह नादाना मदनलाल सीरवी बुसी घेवरचंद परमार निवर्तमान ओबीसी मोर्चा अध्यक्ष खोड मंडल सोहनसिंह भोपोजी पृथ्वीसिंह शैतानसिंह दुदसिंह पूर्व सरपंच मकनाराम सीरवी हीरसिंह उदयसिंह मोहनसिंह चंपालाल शांतिलाल छोगसिंह लालसिंह राजपुरोहित रणजीतसिंह वाघेला कालूदास पुखराज सीरवी नेनाराम सीरवी भोगाराम मीणा सहित बड़ी संख्या में भाजपा पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

वन-टू-वन



निगमायुक्त ने किया दर्पण कॉलोनी नाले का औचक निरीक्षण

ग्वालियर। नगर निगम आयुक्त शिवम वर्मा ने दर्पण कॉलोनी में नाले का औचक निरीक्षण किया तथा जहां जलभराव हो रहा था वहां निगम अमला पहले से ही कार्य कर रहा था। निगमायुक्त वर्मा ने अमले को निर्देशित किया कि जहां भी जलभराव हो तत्काल कराएं जलनिकासी की व्यवस्था। इसके साथ ही नाला सफाई के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। निगमायुक्त वर्मा ने राजमाता चौराहा सिटीसेंटर में भी निरीक्षण कर जलनिकासी के प्रबंधों का देखा। निरीक्षण के दौरान अधीक्षक यंत्री जेपी पारा, सहायक सिटी प्लानर सतेन्द्र यादव, महेन्द्र अग्रवाल, दोनों क्षेत्राधिकारी पुष्पेन्द्र श्रीवास्तव एवं सुश्री सुश्री बंसल एवं सहायक स्वास्थ्य अधिकारी किशोर चौहान उपस्थित रहे।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन आज से

ग्वालियर। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की जयंती के अवसर पर एसोसिएशन ऑफ ग्वालियर युथ सोसाइटी एवं संरचना समिति के संयुक्त तत्वाधान में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन 28 अगस्त से शुरू होने जा रहा है। कार्यक्रम संयोजक शिखा ने बताया कि इसमें बच्चों और महिलाओं को शामिल किया गया है। पहली दिन 28 जुलाई को चित्राकन प्रतियोगिता होगी 29 जुलाई को ऑनलाइन रंगोली सजाओ प्रतियोगिता 30 को गुड गुडी नाका क्षेत्र में पौधापोषण किया जाएगा और 31 जुलाई को डीडी मॉल स्थित फूड कोर्ट में फैसी ड्रेस प्रतियोगिता होगी 1 अगस्त को इंदरगंज चौक पर शाम 7-06 बजे मास्क वितरण किया जाएगा 2 अगस्त को काव्य पाठ प्रतियोगिता होगी।

माकपा का महंगाई के खिलाफ आंदोलन

ग्वालियर। महंगाई के खिलाफ माकपा कार्यकर्ता भारी बारिश के बावजूद सभांगीय आयुक्त कार्यालय पहुंचे और प्रदर्शन किया। पुलिस ने राज्य सचिव कॉमरेड जसवंत सिंह सहित करीब एक सैकड़ कार्यकर्ता गिरफ्तार कर जेल भेजा। गिरफ्तार होने वालों में सीटू की जिला अध्यक्ष कमलेश शर्मा, महासचिव एम के जायसवाल, अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति की जिला अध्यक्ष रीना शाक्य, महासचिव प्रीति सिंह, प्रियंका, और गीता जाटव, स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया की नेत्री आकांशा धाकड़दलित शोषण मुक्ति मंच के रामबाबू जाटव, आर डी चोपड़ा, मुस्लिम अधिकार मंच के यूसुफ अब्बास, पूर्व पार्षद भगवान दास सैनी, माकपा के ग्वालियर नगर सचिव कृष्ण बघेल, मुरार नगर समिति के रामकिशन सिंह कुशवाहा, श्याम यादव, नोजवान सभा के नेता अमित सक्सेना, आदि प्रमुख रूप से शामिल हैं जिला सचिव अखिलेश यादव ने पुलिस द्वारा माकपा कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी पर कहा है कि माकपा के कार्यकर्ता दमन के आगे नहीं झुकेंगे एवम महंगाई के खिलाफ आंदोलन जारी रहेगा।

बारिश ने खोली नगर निगम के दावों की पोल, स्मार्ट सिटी का हाल हुआ बेहाल

ग्वालियर। महानगर कोई स्मार्ट सिटी बनाने के लिए नगर निगम और स्मार्ट सिटी कॉर्पोरेशन इन दिनों जनता की गाढ़ी कमाई पानी की तरह बहा रही है। लेकिन एक दिन की झमाझम बारिश ने नगर निगम और स्मार्ट सिटी कॉर्पोरेशन के उन तमाम दावों की पोल खोल दी जो महानगर के विकास के लिए किए जा रहे थे। सोमवार को शाम से शुरू हुई झमाझम बारिश का दौर रात भर चलता रहा और मंगलवार को भी पूरे दिन रिमझिम बारिश होने से शहर में जगह-जगह जलभराव हो गया जिसके कारण लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ा। कहीं सड़क धसक गई तो कहीं इलाकों में रात को बिजली गुल होने से भी लोग परेशान रहे। सबसे बुरा हाल राजपथ बनाए जा रहे कटोरा ताल मार्ग का है यहां स्मार्ट सिटी कॉर्पोरेशन द्वारा सड़क खोदने के कारण हादसों का खतरा बढ़ गया है। वहीं बारिश होने से इस मार्ग की हालत और ज्यादा खराब हो गई है। स्मार्ट सिटी कॉर्पोरेशन शहर को चमकाने के स्मार्ट सिटी कॉर्पोरेशन और नगर निगम जुगलबंदी कर शहर को चमकाने के नाम पर अभी तक करोड़ों की राशि खर्च कर चुके हैं। लेकिन बारिश शुरू होते ही नगर निगम के दावों की भी पोल खुल गई शहर के नाले जहां गंदगी के कारण उफान मार गए वहीं सीवर लाइन चोक होने से जगह-जगह सीवर का पानी भर गया और लोगों को गंदे पानी के बीच में से होकर निकलना पड़ा। शहर के कई इलाकों में रात के समय बारिश से स्टीट लाइटें बंद हो गईं जिसके कारण सड़कों पर अंधेरा छाया रहा वहीं गली मोहल्लों में भी बारिश का पानी जमा होने से लोग परेशान रहे। अभी तो मानसून ने अपनी आमद दर्ज कर रही है।

स्कूल में सिर्फ 20 फीसदी छात्र ही पहुंचे, लेकिन पहले जैसी रौनक नहीं दिख रही

ग्वालियर। ग्वालियर में स्कूल तो खुल गए हैं, लेकिन अभी रौनक नहीं लौटी है। मंगलवार को 11वीं के छात्रों के लिए स्कूल ओपन हुए हैं। कई महीनों बाद ऑफलाइन क्लासेस लगी हैं, लेकिन ज्यादातर स्कूलों में 18 से 20 प्रतिशत बच्चे ही दिखाई दिए। शासकीय स्कूलों में तो 15 प्रतिशत ही छात्र स्कूल पहुंचे हैं। कोरोना की तीसरी लहर को लेकर अभिभावकों में डर साफ देखा जा सकता है। मंगलवार को देखा गया कि स्कूलों के गेट पर ही सैनटाइजर से बच्चों के हैंड वॉश कराए जा रहे हैं। मास्क और थर्मल स्क्रीनिंग के बाद ही क्लास में प्रवेश दिया जा रहा है। यहां

बता दें कि 12 वीं को सोमवार और गुरुवार, 11वीं के छात्रों को मंगलवार और शुक्रवार को स्कूल आना है। कुछ स्कूलों में यह रहा पहले दिन का हाल। प्रगति विद्यापीठ स्कूल: उपनगर मुरार के बड़े स्कूलों में शुमार प्रगति विद्यापीठ स्कूल CBSE बोर्ड है। यहां 9.30 बजे से 11वीं की क्लास लगनी थी। पहले दिन की अपेक्षा दूसरे दिन रिस्पोंस भी ठीक था। पैरेंट्स ग्रुप पर स्कूल खुलने की सूचना दी गई थी। क्लास में छात्रों को एंट्री से पहले थर्मल स्क्रीनिंग, हैंड सैनटाइजिंग करने के बाद ही मिल सकी। बिना मास्क के आने वालों



को हिदायत दी गई। साथ ही स्कूल प्रबंधन ने मास्क उपलब्ध कराए। स्कूल संचालक इंजीनियर राहुल श्रीवास्तव ने बताया कि स्कूल में पहले दिन के हिसाब से रिस्पोंस अच्छा है।

छात्रों की सुरक्षा का पूरा ख्याल रखा जा रहा है। बच्चों के साथ-साथ स्कूल में उन्हीं टीचर को बुलाया जा रहा है जिनका वैकसीनेशन कंप्लीट हो चुका है। पदमा में पहुंची 15 फीसदी छात्राएं: ग्वालियर के M P बोर्ड के सबसे बड़े कन्या विद्यालय पदमाराने विद्यालय में 11वीं में करीब 400 छात्राएं हैं। यहां पहले दिन मंगलवार को 63 छात्राएं स्कूल में आई हैं। जो कुल क्षमता का 15 प्रतिशत हैं। छात्राओं को स्कूल पर ही प्रबंधन ने सैनटाइजर का इंतजाम किया था। बिना मास्क के किसी को प्रवेश नहीं करने दिया। साथ ही पहले एक

क्लास में 40 से 50 बच्चे बैठते थे, लेकिन अब 20 से ज्यादा बच्चों को नहीं बैठाया जा रहा है। सोशल डिस्टेंस का पालन किया जा रहा है। स्कूल में संख्या में दिख रहा तीसरी लहर का डर: स्कूल तो खुल गए हैं, लेकिन स्कूल में आने वाले छात्र-छात्राओं की संख्या में वृद्धि होती नहीं दिख रही है। अभिभावकों में अभी भी कोरोना की तीसरी लहर का डर दिख रहा है। ज्यादातर अभिभावक बच्चों को स्कूल भेजना नहीं चाहते हैं। पदमा विद्यालय में छात्रा शिवानी के पिता देवेन्द्र कुमार ने कहा कि अभी वह आगे जाकर कोरोना की स्थिति और स्कूलों में क्लास लगाने के स्तर को देखने के बाद ही बच्चों को निरंतर स्कूल भेजने का फैसला लेंगे।

पत्नी ने प्रेमी के साथ मिलकर की पति की हत्या

एक वर्ष पूर्व के मामले का खुलासा- पत्नी ने पति को ढूंढने कई जगह लगाये आवेदन

ग्वालियर। ग्वालियर जिले के भितरवार थाना क्षेत्र में रहने वाले एक युवक की उसकी पत्नी ने अपने पति के मित्र एवं प्रेमी के साथ मिलकर हत्या कर उसका शव कुएं में फेंक दिया। इतना ही नहीं पत्नी ने जहां गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराने के साथ ही पुलिस पर लगातार पति को तलाशने की दबाव डालती रही। साथ ही पत्नी ने न्यायालय में पति को तलाशने बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका भी दर्ज कराई है। पुलिस ने इस मामले में पत्नी और उसके प्रेमी को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस अधीक्षक अमित सांघी ने आज पत्रकारों को बताया कि भितरवार थाना क्षेत्र में गत 15 अगस्त 2020 को अपने पति फेरन जाटव की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई। पुलिस अधीक्षक ग्वालियर अमित सांघी ने उक्त गुमशुदगी की पतारसी के



लिये टीम गठित की जिसमें अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक देहात जयराज कुबेर, एसडीओपी भितरवार अभिनव बारगे के मार्गदर्शन में थाने का बल को लगाया। पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर से गत 26 जुलाई को फरियादिया और उसके पुरुष मित्र को जांच के लिये बुलाया। पुलिस को यह भी पता चला कि महिला अपने पुरुष मित्र के

साथ कहीं दक्षिण में भागने की तैयारी में है। पुलिस ने तकनीकी साक्ष्य के साथ जब महिला और उसके पुरुष मित्र से कड़ाई से पूछताछ की तो उन्होंने पूरे मामले का खुलासा कर दिया। महिला और उसके पुरुष मित्र ने बताया कि गत छह अगस्त को थाना हस्तिनापुर क्षेत्र के चपरोली गांव में फेरन को बुलाया। और उसे चपरोली

मौजा में ले जाकर लोहे के पाईप व पथर से सिर पर वार करके हत्या कर दी। इतना ही नहीं फेरन जाटव को एक बाइक पर बैठाकर पास ही गांव के एक खेत में बने कुएं में शव को फेंक दिया। पकड़े गये आरोपियों की निशानदेही पर पुलिस ने कुएं से फेरन के नर कंकाल को बरामद कर लिया। अब पुलिस उसका डीएनए टेस्ट करायेंगी। वहीं हस्तिनापुर

टूक मालिकों से हमला लिए जाने के विरोध में टूक ऑपरेंट्स एसोसिएशन ने एमपीसीसीआई को सौंपा ज्ञापन

ग्वालियर। देश में विगत कुछ समय में डीजल के दामों में हुई बेतहाशा वृद्धि से ट्रांसपोर्ट्स को काफी हानि उठानी पड़ी है और डीजल की दरों में आज भी निरन्तर वृद्धि से टूक ऑपरेंट्स हताश हैं। इसी के साथ ग्वालियर में टूक ऑपरेंट्स द्वारा टूक में माल की चढ़ाई एवं उतराई (लेबर/डाला) सहित अन्य खर्च भी देना होते हैं। जबकि ऑल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट यूनियन ने पूरे भारत में इसे समाप्त करने हेतु दि. 15 जुलाई, 2021 से एक अभियान चलाया गया है, टूक ऑपरेंट्स अपनी इन्हीं समस्याओं से अवगत कराने हेतु टूक ऑपरेंट्स एसोसिएशन, ग्वालियर के अध्यक्ष- अशोक सिंह कसाना के नेतृत्व में आज सायं 5.00 बजे 'चेम्बर भवन' में संस्था के अध्यक्ष- विजय गोयल, संयुक्त अध्यक्ष-प्रशांत गंगवाल, उपाध्यक्ष-पारस जैन एवं मानसेवी सचिव-डॉ. प्रवीण अग्रवाल से मिले एवं अपनी समस्याओं से विस्तार से अवगत कराया गया।

Prashant Bhadouriya 0751-4910086 Prabal Rajawat 9584013254
8279318693 CNTX- 2286

AIRSON PHARMA
Pharmaceutical Distributor

Deal's in - MANKIND, FDC, CHARAK, ABBOTT, MECLEODS, CIPLA, HIMALAYA, MEDLEY, SANOFI ETC

Hujrat Pull Near Madhav Plaza, Jinshi Road-2, Lashkar, Gwalior (M.P.)
Gmail : airsonpharma20gmail.com

पुष्पांजली टुडे
राष्ट्रीय मासिक पत्रिका/दैनिक न्यूज़ पेपर, ऑनलाइन न्यूज़ पोर्टल
पुष्पांजली टुडे समूह द्वारा मध्यप्रदेश के हर एक जिले में तहसील में ब्यूरो एवं रिपोर्टर मनोनीत किया जा रहे है।
इच्छुक व्यक्ति तुरंत संपर्क करें :-
9826576206, 9839251634, 0751-4901403

पंकज त्रिपाठी
स्टेट ब्यूरो चीफ म.प्र.

सौम्या प्रोपर्टीज
ग्वालियर शहर में बिना ब्याज के आसान मासिक किस्तों पर आज ही अपने सपनों का घर बनाने के लिये प्लॉट बुक करें।
सेना के जवानों के लिये विशेष छूट
बेटी के नाम पर बुकिंग करने पर आकर्षण उपहार व 10% की छूट प्लॉट उपलब्ध है
पिंटो पार्क, ग्वालियर भिण्ड रोड, सुरेना झरनी रोड, ग्वालियर सुरेना बड़गांव बुन्देरी रोड, एयरपोर्ट प्रतिनगर रोड
सम्पर्क करें
9713253992
www.somyaproperty.com
तोमर मार्केट गायत्री मंदिर वाली गली पिंटो पार्क ग्वा.

GPS BASED VEHICLE TRACKING SYSTEM & MANAGEMENT FROM W2TRACK SOLUTIONS
Please call us for demo/order: +91 9827270016/7738373527/7738373526

जीपीएस आधारित वाहन ट्रैकिंग और वाहन प्रबंधन प्रणाली - अपने परिवहन प्रणाली को अधिक उत्पादक, सुरक्षित और उपयोगकर्ता के अनुकूल बनाएं।

W2TRACK

- ✓ GPS based Track, Monitor & Analyze your vehicles in real-time
- ✓ Digital records of all your fleet operations at Central place
- ✓ Optimise your Routes, Scheduling and Dispatch
- ✓ Improve Driver Behaviour, remotely immobilize vehicle etc.
- ✓ Improve productivity, efficiency & safety
- ✓ Manage fleet expenses & reduce operational cost (ROI)
- ✓ Power Your Fleets with Latest AIS 140 GPS Devices

Website & Mobile based Application/Software

Basic GPS Based Fleet Monitoring System with Advanced Reporting

RTO Approved NTEGRATED AIS 140 GPS Device (ARAI/ICAT Approved)

PUBLIC TRANSPORT VEHICLES
-SCHOOL BUSES
-TAXI/CABS
-TRANSIT BUSES
-INTERCITY BUSES
COMMERCIAL VEHICLES
GSTIN: 27ACUFS2949C1ZO www.w2track.com (Locations PAN India GPS Service)

SABA TECHNOSOFT
Deliver The Best, Performance Assured

₹2999
₹5999